وَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْ لَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
وَ عَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿۲۱﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَ يَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۲۲﴾

आयत नं० 21 से 22

और जो लोग हमारे सामने पेश होने से नहीं डरते (क्योंकि वो क़ियामत और उस की पेशी और हिसाब का इनकार करते हैं) **वो** (पैग़म्बरी के इनकार के लिए) **यह कहते हैं कि हमारे पास फ़रिशते क्यों नहीं आते** (कि अगर फ़रिशते आकर हम से कहें कि ये रसूल हैं) **या हम अपने रब को देख लें** (और वो ख़ुद हम से कह दे कि ये रसूल हैं जब हम मानेंगे, इसके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने कहा कि) **ये लोग अपने दिलों में अपने को बहुत बड़ा समझ रहे हैं** (कि अपने को इस क़ाबिल समझते हैं कि फ़रिशते आकर उन से बोलें या ख़ुद अल्लाह तआ़ला से बात करें) **और** (ख़ास कर अल्लाह तआ़ला को दुनिया में देखने और उससे बात करने की मांग में तो) **ये लोग** (इन्सानियत की) **हद से बहुत दूर निकल गये** (हैं क्योंकि फ़रिशते तो फिर भी इन्सान की तरह मख़लूक़) **हैं(21)** (और ये लोग अललाह तआ़ला को देखने के लाइक़ तो क्या होते बल्कि) **जिस दिन ये लोग फ़रिशतों को देखेंगे** (और वो दिन क़ियामत का है) **उस दिन मुजरिमों** (यानी काफ़िरों) **के लिए कोई ख़ुशी की बात** (नसीब) **न होगी और** (फ़रिशतों को जब अज़ाब के सामान के साथ आता देखेंगे तो घबरा कर) **कहेंगे पनाह है-पनाह है(22)**

नोटः- क़ियामत के दिन जब काफ़िर लोग अज़ाब देखेंगे तो पनाह मागेंगे।

وَ قَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿۲۳﴾ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّ اَحْسَنُ
مَقِيْلًا ﴿۲۴﴾ وَ يَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَ نُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿۲۵﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ٰنِ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَ كَانَ
يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿۲۶﴾ وَ يَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿۲۷﴾
يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿۲۸﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَ كَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ
خَذُوْلًا ﴿۲۹﴾ وَ قَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿۳۰﴾ وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ
الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَ كَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّ نَصِيْرًا ﴿۳۱﴾

आयत नं० 23 से 31

और हम (उस दिन) **उन के** (यानी काफ़िरों के) **उन** (नेक) **कामों की तरफ़ ध्यान करेंगे जो कि वो** (दुनिया में) **कर चुके थे तो उन को ऐसा** (बेकार) **कर** (के दिखा) **देंगे जैसे उड़ती हुई धूल** (कि किसी काम नहीं आती इसी तरह काफ़िरों के भले कामों पर कुछ सवाब न होगा)(23) **जन्नत वालों की उस दिन रहने की जगह भी अच्छी होगी और आराम करने की जगह भी अच्छी होगी(24) और जिस दिन आसमान एक बदली पर से फट जाएगा और** (उस बदली के साथ आसमान से) **फ़रिशते** (ज़मीन पर) **बहुत से उतारे जाएंगे(25)** (और उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला हिसाब- किताब करेंगे और) **उस दिन असली हुकूमत अल्लाह तआ़ला** (ही) **की होगी** (यानी हिसाब किताब और सज़ा व इनआम में किसी को दख़ल न होगा जैसा दुनिया में थोड़ा बहुत दूसरों का भी अमल दख़ल होता है)**, और वो** (दिन) **काफ़िरों पर बड़ा सख़्त दिन होगा** (क्योंकि उनके हिसाब का अन्जाम जहन्नम ही है)(26) **और जिस दिन ज़ालिम** (यानी काफ़िर पछतावे से) **अपने हाथ काट-काट खाएगा** (और) **कहेगा क्या अच्छा होता मैं रसूल के साथ** (दीन की) **राह पर होता(27) हाय मेरी बद नसीबी** (कि ऐसा न किया और) **क्या अच्छा होता कि मैं उस आदमी को दोस्त न बनाता(28) उस** (कमबख़्त) **ने मुझ को नसीहत आने के बाद उससे बहका** (दिया और हटा) **दिया, और शैतान तो इन्सान को** (ऐन वक़्त पर) **मदद करने से जवाब दे देता है** (जैसा कि उस काफ़िर के पछतावे के वक़्त उसने कोई हमदर्दी न की जब कि करने से भी कुछ न होता सिर्फ़ दुनिया ही में बहकाने को था)(29) **और** (उस दिन) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआ़ला से काफ़िरों की शिकायत करते हुए) **कहेंगे कि या रब मेरे मेरी** (इस) **क़ौम ने इस क़ुरआन को** (कि जिस पर अमल करना वाजिब था) **बिल्कुल छोड़ रक्खा था** (और अमल करना तो दूर ध्यान ही न करते थे मतलब यह कि ख़ुद काफ़िर भी अपनी गुमराही का इक़रार करेंगे और रसूल भी गवाही देंगे इस तरह सबूत पक्का होकर सज़ा पाएंगे)(30) **और हम इस तरह मुजरिम लोगों में से हर नबी के दुशमन बनाते रहते हैं** (यानी ये लोग जो क़ुरआन का इनकार करके आप की मुख़ालफ़त कर रहे हैं कोई नई बात नहीं जिस का ग़म किया जाए)**, और** (जिस को हिदायत देना चाहे उस की) **हिदायत करने को और** (जो हिदायत से महरूम है उस के मुक़ाबिले में आप की) **मदद करने को आप का रब काफ़ी है(31)**

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि हमारे दोस्तों में कौन

लोग बेहतर हैं तो आपने फ़रमाया "वो आदमी जिस को देख कर ख़ुदा याद आए और जिस की बात से तुम्हारा इल्म बढ़े और जिसके कामों को देख कर आख़रत की याद ताज़ा हो"।

(क़रतबी)

और एक हदीस में है कि जिस आदमी ने क़ुरआन पढ़ा मगर फिर उस को बन्द करके घर में रख दिया न उस की तिलावत की पाबन्दी की न उस के हुक्मों में सोचा तो क़ियामत के दिन उसके गले में पड़ा हुआ आएगा और अल्लाह तआ़ला के दरबार में शिकायत करेगा कि आप के इस बन्दे ने मुझे छोड़ दिया था अब आप मेरे उसके मुआमले में फ़ैसला कर दें।

(क़रतबी)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾
وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿٣٣﴾ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ
شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾

आयत नं० 32 से 34

और काफ़िर लोग यह कहते हैं कि इन (पैग़म्बर) **पर सारा क़ुरआन एक ही बार में क्यों नहीं उतारा गया** (मन्शा इस ऐतराज़ से यह है कि अगर ख़ुदा का कलाम होता तो थोड़ा-थोड़ा उतारने की क्या ज़रूरत थी, इस थोड़ा-थोड़ा उतारने से तो यह शक होता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद ही सोच-सोच कर थोड़ा-थोड़ा बना लेते हैं, आगे इस ऐतराज़ का जवाब है कि) **इस तरह** (थोड़ा-थोड़ा) **इसलिए** (हम ने उतारा) **है ताकि हम इस के वास्ते से आप के दिल को मज़बूत रक्खें और** (इसी लिए) **हम ने इस को बहुत ठहरा-ठहरा कर उतारा है** (जैसा कि तेईस साल में आहिस्ता-आहिस्ता पूरा हुआ)(32) **और ये लोग कैसा ही अनोख सवाल आप के सामने लाएं मगर हम** (उस का) **ठीक-ठीक जवाब और इससे बेहतर खोल कर बता देते हैं** (ताकि आप मुख़ालिफ़ों को जवाब दे सकें)(33) **ये वो लोग हैं जो अपने चेहरों के बल** (घसीट कर) **जहन्नम की तरफ़ ले जाए जाएंगे ये लोग जगह में भी बदतर हैं और तरीक़े में भी गुमराह हैं**(34)

नोटः- क़ुरआन के थोड़ा-थोड़ा उतरने से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल की मज़बूती और

तसल्ली में कई वजहें हैं एक तो यह कि याद रखना आसान हो गया एक बड़ी किताब एक दम उतारी जाती तो यह आसानी न रहती और आसानी के साथ याद होते रहने से दिल में कोई परीशानी नहीं रहती दूसरे काफ़िरों के ऐतराज़ के वक़्त आप की तसल्ली के लिए क़ुरआन में आयत उतर जाती और अगर पूरा क़ुरआन एक दम उतारा जाता तो उस क़िस्से पर तसल्ली के लिए क़ुरआन में आयत को तलाश करने की ज़रूरत पड़ती तीसरे पैग़ामे ख़ुदावन्दी का आना ताज़ा गवाही है ख़ुदा की मदद की जो कि दिल की मज़बूती के लिए बड़ी चीज़ है और इसके सिवा और भी बहुत सी हिकमतें और फ़ाइदे हैं।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَاۤ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ
فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ
عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا
تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْۤ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ
نُشُوْرًا ﴿٤٠﴾ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿٤١﴾ اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا
لَوْلَاۤ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ
اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا
كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٤﴾

आयत नं० 35 से 44

और बेशक हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) **को** (तौरेत) **किताब दी थी और** (उस किताब के मिलने से पहले) **हमने उन के साथ उन के भाई हारून को** (उन का) **मददगार बनाया था**(35) **फिर हम ने** (दोनों को) **हुक्म दिया कि दोनों आदमी उन लोगों के पास** (नसीहत करने के लिए) **जाओ जिन्होंने हमारी** (तौहीद की) **दलीलों को झुटलाया है** (मुराद इससे फ़िरऔन और उसकी क़ौम है बस ये दोनों हज़रात वहां पहुंचे और समझाया मगर उन्होंने न माना)**, सो हम ने उन को** (अपने अज़ाब से) **बिल्कुल ही बर्बाद कर दिया** (यानी दरिया में डुबाए गये)(36) **और नूह** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम को भी** (उनके ज़माने में) **हम हलाक कर चुके हैं** (जिस की वजह यह है कि) **जब**

उन्होंने पैग़म्बरों को झुटलाया तो हम ने उन को (तूफ़ान से) **डुबो दिया और हम ने उन** (के क़िस्से) **को लोगों** (की सीख) **के लिए निशानी बना दिया,** (यह तो दुनिया में सज़ा हुई) **और** (आख़रत में) **हम ने** (उन) **ज़ालिमों के लिए दर्दनाक सज़ा तैयार कर रक्खी है(37) और हम ने आद और समूद और असहाबे रस्स और उन के बीच-बीच में बहुत सी उम्मतों को हलाक किया(38) और हम ने** (उन उम्मतों में से) **हर एक** (की हिदायत) **के वास्ते अजीब अजीब** (यानी असर करने वाली) **मिसालें बयान कीं, और** (जब न माना तो) **हम ने सब को बिल्कुल ही बर्बाद कर दिया(39) और ये** (काफ़िर लोग मुल्क शाम के सफ़र में) **उस बस्ती से होकर गुज़रते हैं जिस पर बुरी तरह पत्थर बरसाए गये थे** (यानी क़ौमे लूत की बस्ती)**, तो क्या ये लोग उस को देखते नहीं रहते** (फिर भी सीख नहीं लेते कि कुफ़्र को छोड़ दें जिस की वजह से क़ौमे लूत को सज़ा हुई और सीख न लेने की यह वजह नहीं कि उस बस्ती को देखते नहीं) **बल्कि** (असल वजह इसकी यह है कि) **ये लोग मर कर जी उठने की उम्मीद नहीं रखते** (यानी आख़रत का इनकार करते हैं इसलिए कुफ़्र को सज़ा की वजह नहीं समझते बल्कि हादसा समझते हैं यह वजह है सीख न लेने की)**(40) और** (ऐ पैग़म्बर) **जब ये लोग आप को देखते हैं तो बस आप का मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं,** (और कहते हैं) **कि क्या ये ही** (बुज़ुर्ग) **हैं जिन को अल्लाह तआ़ला ने पैग़म्बर बना कर भेजा है** (यानी ऐसा ग़रीब आदमी पैग़म्बर न होना चाहिए अगर पैग़म्बरी कोई चीज़ है तो कोई रईस मालदार होना चाहिए था बस ये पैग़म्बर नहीं)**(41) उस आदमी** (की जादू बयानी मगर ऐसी है कि उस) **ने तो हम को हमारे माबूदों से हटा ही दिया होता अगर हम उन पर** (मज़बूती से) **जमे न रहते** (यानी हम तो हिदायत पर हैं और यह हम को गुमराह करने की कोशिश करता था)**, और** (अल्लाह तआ़ला उन की बात की काट के लिए फ़रमाते हैं कि ये ज़ालिम अब तो अपने आप को हिदायत पर और हमारे पैग़म्बर को गुमराह बता रहे हैं मगर मरने के बाद) **जल्दी ही उन को मालूम हो जाएगा जब अज़ाब को देखेंगे कि कौन आदमी गुमराह था** (कि ये ख़ुद या नऊज़ुबिल्लाह पैग़म्बर)**(42) आपने** (ऐ पैग़म्बर) **उस आदमी की हालत भी देखी जिसने अपना ख़ुदा अपनी मनमर्ज़ी को बना रक्खा है, तो क्या आप उसकी ज़िम्मेदारी ले सकते हैं(43) या आप सोचते हैं कि उनमें अक्सर सुनते या समझते हैं** (मतलब यह कि आप उन की गुमराही से ग़म न कीजिए क्योंकि आप की ज़िम्मेदारी नहीं कि चाहे न चाहे उन को राह पर लाएं और न हिदायत की उन से उम्मीद कीजिए क्योंकि न हक़ बात को ये सुनते हैं न अक़्ल है कि सोचें) **ये तो सिर्फ़ जानवरों की तरह हैं** (कि वो बात को न सुनते हैं न समझते हैं) **बल्कि ये उन से भी ज़्यादा भटके हुए हैं** (क्योंकि वो तो

दीन के हुक्मों के पाबन्द नहीं तो उन का न समझना बुरा नहीं और इन पर हुक्मों को मानने की पाबन्दी है फिर भी नहीं समझते)(44)

नोटः- असहाबे रस्स कौन लोग थे कुरआन और हदीस में उस क़ौम का ज़िक्र नहीं। इस्राइली रिवायतों से पता चलता है कि ये क़ौम समूद के बचे लोग थे जो किसी कुए के पास आबाद थे।

اَلَمۡ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيۡفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوۡ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلۡنَا الشَّمۡسَ عَلَيۡهِ دَلِيۡلًا ﴿۴۵﴾ ثُمَّ قَبَضۡنٰهُ
اِلَيۡنَا قَبۡضًا يَّسِيۡرًا ﴿۴۶﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ جَعَلَ لَكُمُ الَّيۡلَ لِبَاسًا وَّالنَّوۡمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوۡرًا ﴿۴۷﴾ وَهُوَ الَّذِىۡۤ
اَرۡسَلَ الرِّيٰحَ بُشۡرًاۢ بَيۡنَ يَدَىۡ رَحۡمَتِهٖ ۚ وَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوۡرًا ﴿۴۸﴾ لِّنُحۡیِۦَ بِهٖ بَلۡدَةً مَّيۡتًا وَّنُسۡقِيَهٗ
مِمَّا خَلَقۡنَاۤ اَنۡعَامًا وَّاَنَاسِىَّ كَثِيۡرًا ﴿۴۹﴾ وَلَقَدۡ صَرَّفۡنٰهُ بَيۡنَهُمۡ لِيَذَّكَّرُوۡا ۖ فَاَبٰٓى اَكۡثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوۡرًا ﴿۵۰﴾ وَلَوۡ
شِئۡنَا لَبَعَثۡنَا فِىۡ كُلِّ قَرۡيَةٍ نَّذِيۡرًا ﴿۵۱﴾ فَلَا تُطِعِ الۡكٰفِرِيۡنَ وَجَاهِدۡهُمۡ بِهٖ جِهَادًا كَبِيۡرًا ﴿۵۲﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ مَرَجَ الۡبَحۡرَيۡنِ
هٰذَا عَذۡبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلۡحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيۡنَهُمَا بَرۡزَخًا وَّحِجۡرًا مَّحۡجُوۡرًا ﴿۵۳﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ مِنَ الۡمَآءِ
بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهۡرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيۡرًا ﴿۵۴﴾ وَيَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنۡفَعُهُمۡ وَلَا يَضُرُّهُمۡ ؕ وَ
كَانَ الۡكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيۡرًا ﴿۵۵﴾ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ﴿۵۶﴾ قُلۡ مَاۤ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ اِلَّا مَنۡ شَآءَ
اَنۡ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيۡلًا ﴿۵۷﴾ وَتَوَكَّلۡ عَلَى الۡحَـىِّ الَّذِىۡ لَا يَمُوۡتُ وَسَبِّحۡ بِحَمۡدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوۡبِ عِبَادِهٖ
خَبِيۡرًا ۛۚ ﴿۵۸﴾ ۨالَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَا فِىۡ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ ۛۚ اَلرَّحۡمٰنُ فَسۡـَٔلۡ
بِهٖ خَبِيۡرًا ﴿۵۹﴾ وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمُ اسۡجُدُوۡا لِلرَّحۡمٰنِ قَالُوۡا وَمَا الرَّحۡمٰنُ ۗ اَنَسۡجُدُ لِمَا تَاۡمُرُنَا وَزَادَهُمۡ نُفُوۡرًا ﴿۶۰﴾ تَبٰرَكَ
الَّذِىۡ جَعَلَ فِى السَّمَآءِ بُرُوۡجًا وَّجَعَلَ فِيۡهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيۡرًا ﴿۶۱﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ جَعَلَ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ خِلۡفَةً
لِّمَنۡ اَرَادَ اَنۡ يَّذَّكَّرَ اَوۡ اَرَادَ شُكُوۡرًا ﴿۶۲﴾

आयत नं० 45 से 62

(ऐ लोगों) **क्या तुम ने अपने रब** (की कुदरत) **की तरफ़ नज़र नहीं की कि उसने** (सूरज निकलने के वक़्त खड़ी हुई चीज़ों के) **साय को किस तरह** (दूर तक) **फैलाया** (है क्योंकि सूरज निकलने के वक़्त हर चीज़ का साया लम्बा होता) **है, और अगर वो चाहता तो उस को एक**

हालत पर ठहराया हुआ रखता (यानी सूरज को ऊंचा होने पर भी न घटता), **फिर हम ने सूरज को उस** (साय के घटने बढ़ने) **पर** (एक खुली) **निशानी बना दिया(45) फिर हम ने उस** (साए) **को अपनी तरफ़ धीरे-धीरे समेट लिया** (यानी जैसे-जैसे सूरज ऊंचा हुआ वो साया घटते घटते ख़त्म होता गया)(46) **और वो ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दे की चीज़ और नींद को आराम की चीज़ बनाया और दिन को** (रात के आराम के बाद दोबारा) **उठ खड़े होने का वक़्त बनाया(47) और वो ऐसा है कि अपनी रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वो** (बारिश की उम्मीद दिलाकर दिल को) **ख़ुश कर देती हैं, और हम आसमान से पानी बरसाते हैं जो पाक साफ़ करने की चीज़ है(48) ताकि उस** (पानी) **से मुर्दा ज़मीन में जान डाल दें और अपनी मख़लूक़ में से बहुत से जानवरों और बहुत से इन्सानों को पिलाएं(49) और हम उस** (पानी) **को** (जैसा सही समझते हैं) **उन लोगों के बीच बांट देते हैं ताकि लोग सोचें** (कि ये काम किसी बड़ी क़ुदरत वाले के हैं कि वो ही इबादत का हक़दार है) **तो** (चाहिए था कि सोच कर उस का हक़ अदा करते लेकिन) **अक्सर लोग बिना नाशुक्री किये न रहे** (जिसमें सबसे बढ़ कर कुफ़्र व शिर्क है)(50) **और** (आप तबलीग़ के काम से हिम्मत न हारिये कि मैं अकेला कैसे इस काम को करूंगा) **अगर हम चाहते तो** (आप के सिवा इसी ज़माने में) **हर बस्ती में एक पैग़म्बर भेज देते** (और अकेले आप पर इतना काम न डालते लेकिन चूंकि आप का सवाब बढ़ाना है इसलिए हम ने ऐसा नहीं किया)(51) **सो** (इसे नेमत समझ कर इसके शुक्रिये में) **आप काफ़िरों की ख़ुशी का काम न कीजिए** (यानी काफ़िर तो इससे ख़ुश होंगे कि तबलीग़ न हो या कमी हो जाए और उनकी आज़ादी में रूकावट न हो) **और क़ुरआन** (में जो हक़ की दलीलें बयान हुई हैं उन) **से उन का पूरी ताक़त से मुक़ाबिला कीजिए** (यानी हिम्मत के साथ तबलीग़ का काम करते रहिए)(52) **और वो** (अल्लाह) **ऐसा है जिस ने दो दरियाओं को** (इस तरह) **मिलाया जिनमें एक** (का पानी) **तो मीठा है प्यास बुझाने वाला और एक** (का पानी) **नमकीन खारा है, और** (आपस में मिलने के बावजूद) **उनके बीच में** (अपनी क़ुदरत से) **एक पर्दा और** (असल में मिलने से) **एक बड़ी रूकावट रख दी** (जो दिखाई नहीं देती, इससे मुराद वो मौक़े हैं जहां नदियां और नहरें समन्दर में आकर गिरती हैं और मीलों दूर तक उन का मीठा पानी समन्दर के खारी पानी के साथ अलग-अलग बहते हैं)(53) **और वो ऐसा है जिसने पानी से** (यानी मनी से) **इन्सान को पैदा किया फिर उस को ख़ानदान वाला और सुसराल वाला बनाया** (इस नेमत में क़ुदरत की दलील भी है कि पानी से कैसा बना दिया), **और** (लोगों) **तुम्हारा रब बड़ी क़ुदरत वाला है(54) और** (फिर भी) **ये** (मुशरिक) **लोग** (ऐसे)

अल्लाह को छोड़ कर उन चीज़ों की इबादत करते हैं (जो इबादत करने पर) **न उन को कुछ नफ़ा पहुंचा सकती हैं और न** (इबादत न करने की सूरत में) **उन को कुछ नुक़सान पहुंचा सकती हैं, और काफ़िर तो अपने रब का मुख़ालिफ़** (है कि उस को छोड़ कर दूसरे की इबादत करता) **है**(55) **और** (ऐ पैग़म्बर आप उन के ईमान न लाने से ग़म न करें क्योंकि) **हम ने आप को सिर्फ़ इसलिए भेजा है कि** (ईमान वालो को जन्नत की) **ख़ुशख़बरी सुनाएं और** (काफ़िरों को दोज़ख़ से) **डराएं**(56) **आप** (इन लोगों से यह) **कह दीजिए कि मैं तुम से इस** (तबलीग़) **पर कोई बदला** (माली या इज़्ज़त का) **नहीं मांगता हां जो आदमी यह चाहे कि अपने रब तक** (पहुंचने) **का रास्ता पा जाए** (तो यह तो मैं ज़रूर चाहता हूं इसे चाहे बदला समझ लो)(57) **और** (काफ़िरों की मुख़ालफ़त से न घबराओ बल्कि तबलीग़ में) **उस ज़िन्दा और कभी न मरने वाले पर भरोसा रखिये और** (तसल्ली के साथ) **उस की हम्द के साथ** (उसकी) **तस्बीह में लगे रहिए, और वो** (अल्लाह) **अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने के लिए काफ़ी है** (वो जब ठीक समझेगा सज़ा देगा)(58) **वो ऐसा हैं जिसने आसमान व ज़मीन और जो कुछ उन के बीच में है सब छः दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा किया फिर अर्श** (जो शाही कुर्सी जैसा है उस) **पर** (इस तरह) **क़ाइम** (और जलवा फ़रमा) **हुआ** (जो कि उस की शान के लाइक़ है) **वो बड़ा महरबान है सो उस की शान किसी जानने वाले से पूछना चाहिए** (कि वो कैसा है काफ़िर मुशरिक क्या जानें और न जानने की वजह से शिर्क करते हैं)(59) **और जब इन** (काफ़िरों) **से कहा जाता है कि रहमान** (यानी अल्लाह तआ़ला) **को सजदा करो तो** (जहालत और हटधर्मी से) **कहते हैं कि रहमान क्या चीज़ है** (जिसके सामने हम को सजदा करने को कहते हो) **क्या हम उस को सजदा करने लगेंगे जिस को तुम सजदा करने के लिए कहोगे और इससे उन को और ज़्यादा नफ़रत होती है** (वो ऐसा हटधर्मी से कहते थे)(60) **वो ज़ात बहुत आलीशान है जिसने आसमान में बड़े-बड़े सितारे बनाए और उन सितारों में एक रौशन चराग़** (यानी सूरज) **और नूरानी चान्द बनाया**(61) **और वो ऐसा है जिसने रात और दिन एक दूसरे के पीछे आने जाने वाले बनाए** (और यह सब कुछ जो तौहीद की दलीलों और अल्लाह की नेमतों का ज़िक्र हुआ है) **उस आदमी के** (समझाने के) **लिए** (हैं) **जो समझना चाहे या शुक्र करना चाहे** (कि इसमें समझने वाले की नज़र में दलीले हैं और शुक्र करने वाले की नज़र में नेमते हैं)(62)।

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ۝٦٣ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ
لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ۝٦٤ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝٦٥ اِنَّهَا
سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٦٦ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ۝٦٧ وَالَّذِيْنَ
لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ
يَلْقَ اَثَامًا ۝٦٨ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ۝٦٩ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا
صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٧٠ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ
يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ۝٧١ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ۝٧٢ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا
بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ۝٧٣ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ
اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝٧٤ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝٧٥
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٧٦ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ
يَكُوْنُ لِزَامًا ۝٧٧

आयत नं० 63 से 77

और अल्लाह के (ख़ास) **बन्दे वो हैं जो ज़मीन पर आजज़ी से** (दबे पांव) **चलते हैं** (मतलब यह है कि उनके मिज़ाज में बड़प्पन नहीं है और इसी का असर उनकी चाल में भी है) **और** (दूसरों के साथ उन का बरताव यह है कि) **जब उन से जहालत वाले लोग** (जहालत की) **बात** (चीत) **करते हैं तो वो** (बुराई मिटाने की और) **सलामती की बात करते हैं** (मतलब यह कि अपनी ज़ात के लिए बदला नहीं लेते)(63) **और जो रातों को अपने रब के आगे सजदा और क़ियाम** (यानी नमाज़) **में लगे रहते हैं(64) और जो** (इन सब बातों के बावजूद अल्लाह तआ़ला से इतना डरते हैं कि) **दुआ़एं मांगते हैं कि या रब हमारे हम से जहन्नम के अज़ाब को दूर रखिए क्योंकि उस का अज़ाब पूरी तबाही है(65) बेशक वो जहन्नम बुरा ठिकाना और बुरी जगह** (है यह तो उनकी जिस्मानी इबादत) **है(66) और** (माली इबादत में उन का तरीक़ा यह है कि) **वो जब ख़र्च करने लगते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं** (कि गुनाह में ख़र्च करने लगें) **और न तंगी करते हैं** (कि ज़रूरी कामों में भी ख़र्च में कमी करें) **और उन का ख़र्च करना इस** (ज़्यादती और कमी) **के बीच की चाल होता है(67) और जो** (गुनाह से बचने में यह शान रखते हैं कि) **अल्लाह**

तआ़ला के साथ किसी और माबूद की इबादत नहीं करते और जिस आदमी (के क़त्ल करने) **को अल्लाह तआ़ला ने** (शरीअ़त की रू से) **हराम किया है उसको क़त्ल नहीं करते हां मगर हक़ पर यानी जब शरीअ़त की रू से क़त्ल की इजाज़त हो तो और बात है और वो बदकारी नहीं करते और जो आदमी ऐसे काम करेगा तो सज़ा पाएगा(68) क़ियामत के दिन उस का अज़ाब बढ़ता चला जाएगा और वो इस अज़ाब में रूसवा होकर सदा-सदा रहेगा** (यह सदा का और रूसवा करने वाला अज़ाब मुशरिकों के लिए है)**(69) मगर जो** (शिर्क व गुनाह से) **तौबा करले और** (इस तौबा के क़ुबूल होने की शर्त यह है कि) **ईमान** (भी) **ले आए और नेक काम करता रहे** (यानी ज़रूरी इबादतें करता रहे) **तो अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों के** (पिछले) **गुनाहों** (को मिटा कर उन) **को नेकियों से बदल देगा, और** (यह इसलिए हुआ कि) **अल्लाह तआ़ला बहुत बख़्शने वाला** (है इसलिए गुनाहों को मिटा दिया और) **बड़ा महरबान है** (इसलिए नेकियां दी गईं)**(70) और जो आदमी** (जिस गुनाह से) **तौबा करता है और नेक काम करता है** (यानी आगे को गुनाह से बचता रहे) **तो वो** (भी अज़ाब से बचा रहेगा क्योंकि वो) **अल्लाह तआ़ला की तरफ़** (सच्ची नीयत के साथ) **लौ लगा रहा है(71) और** (आगे फिर अल्लाह के ख़ास बन्दों की ख़ूबियां बयान करते हैं यानी उनमें यह बात है कि) **वो बेहूदा बातों में** (जैसे शरीअत के ख़िलाफ़ खेल तमाशों में) **शामिल नहीं होते और अगर** (कभी) **बेहूदा कामों के पास से होकर गुज़रें तो इज़्ज़तदारों की तरह** (शराफ़त के साथ) **गुज़र जाते हैं** (यानी उस की तरफ़ ध्यान नहीं देते)**(72) और वो ऐसे हैं कि जिस वक़्त उन को अल्लाह के हुक्मों से नसीहत की जाती है तो उन** (हुक्मों) **पर बहरे अन्धे होकर नहीं गिरते** (बल्कि सुनने वाले देखने वाले समझदार इन्सान की तरह उनमें सोचते हैं और अमल करते हैं)**(73) और वो ऐसे हैं कि** (जैसे ख़ुद दीन के आशिक़ हैं इसी तरह अपने घर वालों के लिए भी) **दुआ करते रहते हैं कि या रब हमारे हम को हमारी बीवियों और हमारी औलाद की तरफ़ से आंखों की ठन्डक** (यानी चैन) **दीजिए** (यानी उनको दीनदार बना दीजिए) **और** (घर वालों के सरदार तो हैं ही उन को परहेज़गार बनाकर) **हम को परहेज़गारों का सरदार बना दीजिए(74)** (आगे उन अल्लाह के बन्दों के बदले व इनआम का बयान है यानी) **ऐसे लोगों को** (जन्नत में रहने को) **झरोंकेदार महल मिलेंगे उनके** (दीन व ताबेदारी पर) **जमे रहने की वजह से और उन को उस** (जन्नत) **में** (फ़रिशतों की तरफ़ से) **मुबारकबाद और सलाम मिलेगा(75)** (और) **उस** (जन्नत) **में वो सदा-सदा रहेंगे, वो कैसा अच्छा ठिकाना और जगह है(76)** (ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (आम लोगों से) **कह दीजिए कि मेरा रब तुम्हारी ज़रा भी परवा**

न करेगा अगर तुम इबादत न करोगे सो (ऐ काफ़िरों) **तुम तो** (अल्लाह के हुक्मों को) **झूटा समझते हो तो जल्द ही यह** (झूटा समझना तुम्हारे लिए जान का) **वबाल हो**(कर रहे)**गा** (चाहे दुनिया में भी मुसीबत आए वर्ना आख़िरत में तो ज़रूर)(77)

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तहज्जुद (रात की इबादत) की पाबन्दी करो क्योंकि वो तुम से पहले भी सब नेक बन्दों की आदत रही है। और वो अल्लाह तआ़ला से तुम को नज़दीक करने वाली और गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और गुनाहों से रोकने वाली चीज़ है। (मज़हरी)

26-सूरत-शुअरा

इस मक्की सूरत में '11' रूकू और '227' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

طٰسٓمّٓ ﴿۱﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۲﴾ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۳﴾ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ
السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ﴿۴﴾ وَ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ
مُعْرِضِيْنَ ﴿۵﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۶﴾ اَوَ لَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا
فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ﴿۷﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۸﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ﴿۹﴾

आयत नं० 01 से 09

तासीम मीम (इस का मतलब तो अल्लाह ही को मालूम है)**(01) ये** (आयतें जो आप पर उतरती हैं हक़ को) **खोल कर बयान करने वाली किताब** (यानी क़ुरआन) **की आयतें हैं(02)** (और ये लोग जो इस पर ईमान नहीं लाते तो आप इतना ग़म क्यों करते हैं कि ऐसा लगता है कि) **शायद आप उन के ईमान न लाने पर** (अफ़सोस करते करते) **अपनी जान देदेंगे(03)** (असल बात यह है कि यह दुनिया आज़माने के लिए है ईमान लाना या न लाना बन्दे के बस में रहता है वर्ना) **अगर हम** (इन को ज़बरदस्ती मोमिन करना) **चाहें तो उन पर आसमान से एक** (ऐसी) **बड़ी निशानी उतार दें** (कि उस के आगे मजबूर हो जाएं) **फिर उन की गर्दनें उस** (निशानी के आने) **से झुक जाएं** (और मजबूर होकर ईमान ले आऐं लेकिन ऐसा करने से इम्तिहान बाक़ी न रहेगा इसलिए ऐसा नहीं किया जाता)**(04) और** (उन की यह हालत है कि) **उन के पास अल्लाह तआला की तरफ़ से जब कोई नसीहत आती है ये उससे मुंह मोड़ लेते हैं(05) सो** (नौबत यहां तक पहुंची कि) **उन्होंने** (सच्चे दीन को) **झूटा बता दिया** (और झुटलाने के साथ हंसी भी उड़ाई) **सो अब जल्दी उन को इस बात की असलीयत पता चल जाएगी जिसके साथ ये मज़ाक़ किया करते थे** (यानी जब ख़ुदा के अज़ाब को मौत के वक़्त या क़ियामत में देखेंगे)**(06) क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा** (जो

उन के बहुत पास और हर वक़्त नज़रों के सामने है) **कि हम ने उसमें कितनी अच्छी-अच्छी चीज़ें उगाईं** (हैं जो पैदा करने वाले की क़ुदरत की दलील) **हैं(07) बेशक इसमें** (तौहीद की) **एक बड़ी** (अक़्ली) **निशानी है, और** (इसके बावजूद) **उनमें के अक्सर लोग ईमान नहीं लाते** (और शिर्क करते हैं जो पैग़म्बरी के इनकार से भी बढ़ कर है, फिर ऐसे ज़िद्दी लोगों के पीछे क्यों जान खोई जाए)(08) **और** (अगर उन को शिर्क पर फ़ौरन अज़ाब न मिलने से शक है तो इसकी वजह यह है कि) **बेशक आप का रब** (इसके बावजूद कि) **ज़बरदस्त** (ताक़त और क़ुदरत वाला) **है** (मगर इसके साथ ही) **रहमत वाला** (भी है इसलिए दुनिया में काफ़िरों को मोहलत दे रक्खी) **है(09)**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि नसीहत को तो कोशिश भर करना चाहिए फिर भी अगर हिदायत न हो तो उस पर ज़्यादा ग़म न करना चाहिए।

وَ اِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰۤى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۙ۝۱۰ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝۱۱ قَالَ رَبِّ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ
يُّكَذِّبُوْنِ ؕ۝۱۲ وَ يَضِيْقُ صَدْرِيْ وَ لَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۝۱۳ وَ لَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ
يَّقْتُلُوْنِ ۚ۝۱۴ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَاۤ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ۝۱۵ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ۝۱۶ اَنْ
اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ؕ۝۱۷ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّ لَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۙ۝۱۸ وَ فَعَلْتَ
فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَ اَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝۱۹ قَالَ فَعَلْتُهَاۤ اِذًا وَّ اَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ؕ۝۲۰ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ
فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّ جَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝۲۱ وَ تِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ؕ۝۲۲ قَالَ
فِرْعَوْنُ وَ مَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ۝۲۳ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝۲۴ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ
اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ۝۲۵ قَالَ رَبُّكُمْ وَ رَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝۲۶ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ۝۲۷
قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝۲۸ قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ
مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ۝۲۹ قَالَ اَوَ لَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ۚ۝۳۰ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝۳۱ فَاَلْقٰى عَصَاهُ
فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۚۖ۝۳۲ وَّ نَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝۳۳

आयत नं० 10 से 33

और (इन लोगों को उस वक़्त का क़िस्सा सुनाइये) **जब आप के रब ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को पुकारा** (और हुक्म दिया) **कि तुम ज़ालिम लोगों के पास जाओ**(10) **यानी फ़िरऔन की क़ौम**

के पास (जाओ, और देखो) **क्या ये लोग** (हमारे गुस्से से) **नहीं डरते** (यानी वो लोग बहुत बुरे काम कर रहे हैं)(11) **उन्होंने कहा कि या रब मेरे** (मैं इस ख़िदमत के लिए हाज़िर हूं लेकिन इस काम के लिए एक मददगार चाहता हूं क्योंकि) **मुझ को यह ख़तरा है कि वो मुझे** (अपनी पूरी बात कहने से पहले ही) **झुटलाने लगें**(12) **और** (ऐसे वक़्त में) **मेरे दिल में घुटन सी होने लगती है और मेरी ज़बान** (अच्छी तरह) **नहीं चलती इसलिए हारून के पास** (भी वही) **भेज दीजिए** (और उनको नबी बना दीजिए कि अगर मुझ को झुटलाया जाए तो वो तस्दीक़ करने लगें ताकि दिल मज़बूत और ज़बान जारी रहे)(13) **और** (एक बात यह है कि) **मेरे ज़िम्मे उन लोगों का एक जुर्म भी है** (कि मेरे हाथ से उनके एक आदमी का क़त्ल हो गया था) **तो** (इसलिए) **मुझ को** (एक) **ख़तरा यह है कि वो लोग मुझ को** (हुक्म पहुंचाने से पहले) **क़त्ल कर डालें** (तब भी हुक्म न पहुंचा सकूंगा इस का भी कोई इन्तिज़ाम कर दीजिए)(14) **कहा** (अल्लाह तआला ने) **कि क्या मजाल है** (जो ऐसा कर सकें और हम ने हारून को भी पैग़म्बरी दी अब दोनों रूकावटें दूर हुईं) **तो** (अब) **तुम दोनो मेरे हुक्म लेकर जाओ** (कि हारून भी नबी हो गये और) **हम** (मदद से) **तुम्हारे साथ हैं** (और जो बात चीत तुम्हारी और उन लोगों की होगी उस को) **सुनते हैं**(15) **सो तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और** (उस) **से कहो कि हम सारे जहानों के रब** (यानी अल्लाह तआला) **का पैग़ाम लेकर आए हैं**(16) (और तौहीद की दावत के साथ यह हुक्म भी लाए हैं) **कि तुम बनी इस्राईल को** (अपने बेगार और ज़ुल्म से रिहाई देकर उनके असली वतन मुल्क शाम की तरफ़) **हमारे साथ जाने दो** (बस ये दोनों हज़रात गये और फिरऔन से बातें कह दीं)(17) **फ़िरऔन** (ये सब बातें सुन कर मूसा अलैहिस्सलाम को पहचान कर उन से) **कहने लगा कि क्या हम ने तुम को बचपन में नहीं पाला और तुम अपनी** (उस) **उम्र में बरसों हम में रहे सहे**(18) **और तुम ने अपनी वो हरकत भी की थी जो की थी** (यानी उनके एक आदमी को क़त्ल किया था) **और तुम बड़े नाशुक्रे** (आदमी) **हो** (कि मेरा ही खाया, मेरा ही आदमी क़त्ल किया फिर मुझ को अपना ताबे बनाने आए हो चाहिए तो यह था कि तुम मेरे सामने दब कर रहते)(19) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने जवाब दिया कि** (असल में) **उस वक़्त वो हरकत मैं कर बैठा था और मुझ से ग़लती हो गई थी** (यानी जान बूझ कर मैंने क़त्ल नहीं किया उस के ज़ुल्म से उस को रोकना चाहता था कि अचानक वो मर गया)(20) **फिर जब मुझ को डर लगा तो मैं तुम्हारे यहां से फ़रार हो गया फिर मेरे रब ने मुझ को** (ख़ास) **समझदारी बख़्शी और मुझ को पैग़म्बरों में शामिल कर दिया** (मतलब यह कि मैं पैग़म्बरी की हैसियत से आया हूं और वो क़त्ल अन्जाने में हुआ था यह तो क़त्ल के ऐतराज़ का जवाब था)(21)

और (रहा अहसान जिताना परवरिश का तो) **वो यह नेमत है जिसका तुम मुझ पर अहसान रखते हो कि तुम ने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना रक्खा था** (और उन पर ज़ुल्म करते थे कि उनके लड़कों को क़त्ल करते थे जिसके डर से मैं सन्दूक़ में रख कर दरिया में डाला गया और तुम्हारे हाथ लग गया और तुम्हारी परवरिश में रहा तो उस परवरिश की असली वजह तुम्हारा ज़ुल्म ही है तो ऐसी परवरिश का क्या अहसान जिताते हो बल्कि इस बात को याद करके तो तुम को शर्माना चाहिए)(22) **फिरऔन** (इस बात पर लाजवाब हो गया और बात बदल कर उस) **ने कहा कि** (जिस को तुम) **सारे जहानो का रब** (कहते हो वो) **क्या चीज़** (है यानी उसकी असलीयत क्या) **है**(23) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने जवाब दिया कि वो रब है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ** (मख़्लूक़) **उनके बीच में है उस** (सब) **का, अगर तुम को** (सचमुच) **यक़ीन करना हो तो** (यह पता बहुत है, मतलब यह कि उसकी ज़ात को नहीं समझ सकते उस की ख़ूबियों और कमालों से उस को पहचान सकते हैं)(24) **फ़िरऔन ने अपने दरबारियों से कहा कि तुम लोग** (कुछ) **सुनते हो** (कि सवाल कुछ जवाब कुछ)(25) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि वो रब है तुम्हारा और तुम्हारे बाप दादों का**(26) (मगर) **फ़िरऔन** (न समझा और) **कहने लगा कि यह तुम्हारा रसूल जो** (बताता है कि) **तुम्हारी तरफ़ पैग़म्बर होकअर आया है दीवाना** (मालूम होता) **है**(27) **मूसा अलैहि अस्सलाम ने कहा कि वो रब है पूरब और पच्छम का और जो कुछ उनके बीच में है उस का भी, अगर तुम को अक़्ल हो** (तो इसी से मान लो)(28) **फ़िरऔन** (आख़िर मजबूर होकर) **कहने लगा कि अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को माबूद माना तो जेलख़ाना भेज दूंगा**(29) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा क्या अगर मैं कोई खुली दलील दिखाऊं तब भी** (न मानोगे)(30) **फ़िरऔन ने कहा अच्छा तो वो दलील दिखाओ अगर तुम सच्चे हो**(31) **तो मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अपना असा यानी) **अपनी लाठी डाल दी तो अचानक साफ़ अज़दहा बन गया**(32) (और दूसरा मोजिज़ा दिखाने के लिए) **अपना हाथ** (गरीबान में देकर) **बाहर निकाला तो वो अचानक सब देखने वालों के सामने बहुत ही चमकता हुआ हो गया** (कि उस को भी सब ने खुली आंखों से देखा)(33)

नोटः- बनी इस्राईल मुल्क शाम के रहने वाले थे वहां जाना चाहते तो फ़िरऔन उन को जाने न देता था इस तरह चार सौ साल से वो उसकी क़ैद में गुलामी की ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन को हक़ का पैग़ाम पहुंचाने के साथ ही बनी इस्राईल पर जो ज़ुल्म उसने कर रक्खा था उससे बाज़ आने और उनको आज़ाद छोड़ देने की हिदायत की। (क़ुरतबी)

قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۙ﴿۳۴﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ قَالُوْٓا
اَرْجِهْ وَ اَخَاهُ وَ ابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۙ﴿۳۶﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿۳۷﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ
مَّعْلُوْمٍ ۙ﴿۳۸﴾ وَّ قِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ۙ﴿۳۹﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۴۰﴾ فَلَمَّا جَآءَ
السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۴۱﴾ قَالَ نَعَمْ وَ اِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۴۲﴾
قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَ عِصِيَّهُمْ وَ قَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ
الْغٰلِبُوْنَ ﴿۴۴﴾ فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ۚ﴿۴۵﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۙ﴿۴۶﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۴۷﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿۴۸﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۚ﴿۴۹﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۫ اِنَّاۤ اِلٰى
رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۚ﴿۵۰﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۠﴿۵۱﴾

आयत नं० 34 से 51

(हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के जो ये मोजिज़े दिखाई दिये तो) **फ़िरऔन ने नज़दीकी दरबारियों से कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि ये बड़ा माहिर जादूगर है(34) इसका** (असल) **मतलब यह है कि अपने जादू** (के ज़ोर) **से** (ख़ुद सरदार हो जाए और) **तुम को तुम्हारी ज़मीन से बाहर कर दें** (ताकि बिना किसी रोक टोक के अपनी क़ौम को लेकर हुकूमत करे) **तो तुम लोग क्या राय देते हो(35) दरबारियों ने कहा कि आप उन को और उनके भाई को** (कुछ) **मोहलत दीजिए और** (अपने मुल्क के) **शहरों में चपरासियों को** (हुक्म नामे देकर) **भेज दीजिए(36) कि वो** (सब शहरों से) **सब माहिर जादूगरों को** (जमा करके) **आप के पास लाकर हाज़िर करें(37) बस वो जादूगर एक ख़ास दिन के ख़ास वक़्त पर** (मुक़ाबिले के लिए) **जमा कर लिये गये** (और फ़िरऔन को जमा होने की ख़बर देदी गई)**(38) और** (फ़िरऔन की तरफ़ से आम) **लोगों में यह ऐलान किया गया कि क्या तुम लोग** (उस जगह क़िस्सा देखने के लिए) **जमा होंगे** (यानी जमा हो जाओ)**(39) ताकि अगर जादूगर जीत जाएं** (जैसा कि पूरी उम्मीद है) **तो हम उन्हीं के रास्ते पर रहें** (यानी वो ही रास्ता जिस पर फ़िरऔन था और दूसरों को भी उस पर रखना चाहता था, मतलब यह था कि जमा होकर देखो उम्मीद है कि जादूगर जीतेंगे तो हम लोगों का तरीक़ा सही होना दलील से साबित हो जाएगा)**(40) फिर जब वो जादूगर** (फ़िरऔन के सामने) **आए तो फ़िरऔन से कहने लगे कि**

अगर (मूसा अलैहिस्सलाम से) **हम जीत गये तो क्या हम को बड़ा इनआम मिलेगा(41) फ़िरऔन ने कहा हां** (माली इनआम भी बड़ा मिलेगा) **और** (ऊपर से यह रूतब मिलेगा कि) **तुम इस सूरत में** (हमारे) **नज़दीकी लोगों में दाख़िल हो जाओगे(42)** (बस जब मुक़ाबिला शुरू हुआ और जादूगरों ने मूसा अलैहिस्सलम से कहा कि आप अपना असा पहले डालिएगा या हम डालें तो) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने उन से कहा कि जो कुछ तुम डालना चाहो** (मैदान में) **डालो(43) तो उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं** (जो जादू के असर से सांप मालूम होते थे) **और कहने लगे कि फ़िरऔन के नसीब की क़सम हम ही जीतेंगे(44) फिर मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अल्लाह के हुक्म से) **अपना असा डाला डालने के साथ ही** (अज़दहा बनकर) **उन के बने बनाए धन्दे को निगलना शुरू कर दिया(45) बस** (यह देख कर) **जादूगर** (लोगों के दिल पर ऐसा असर हुआ कि) **सब सजदे में गिर गये(46)** (और पुकार-पुकार कर) **कहने लगे कि हम ईमान ले आए सारे जहानों के रब पर(47) जो मूसा और हारून** (अलैहिमुस्सलाम) **का भी रब है(48) फ़िरऔन** (बड़ा घबराया कि कहीं ऐसा न हो कि सारी जनता ही मुसलमान हो जाए तो एक बात घड़ कर गुस्से की सूरत में जादूगरों से) **कहने लगा कि हां तुम मेरी इजाज़त देने से पहले ही मूसा पर ईमान ले आए ज़रूर** (मालूम होता है कि) **यह** (जादू में) **तुम सब का उस्ताद है जिसने तुम सब को जादू सिखाया है** (और तुम उसके चेले हो इसलिए आपस में छुप कर साज़िश कर ली है और हार-जीत का खेल खेला है ताकि ख़ुद हुकूमत करो) **अच्छा अभी तुम्हें पता चल जाएगा, कि मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पैर काटूंगा और तुम सब को सूली पर लटकाऊंगा** (ताकि दूसरे सबक़ लें)**(49) उन्होंने जवाब दिया कि कुछ हरज नहीं हम अपने मालिक के पास जा पहुंचेंगे** (जहां हर तरह का आराम है फिर ऐसे मरने से नुक़सान ही क्या)**(50) हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ग़लतियों को मुआफ़ कर दे इस वजह से कि हम** (इस मौक़े पर हाज़िर लोगों में से) **सब से पहले ईमान लाए(51)**

नोटः- जादूगरों ने फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम खाई जो जहालत के ज़माने का दस्तूर था। इस तरह की क़समें खाना शरीअत से जाइज़ नहीं बल्कि अल्लाह के नाम की झूटी क़सम खाने में जो बड़ा गुनाह है इन नामों की सच्ची क़सम खाने में भी गुनाह उससे कम नहीं।

وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْۤ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝٥٢ فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝٥٣ اِنَّ
هٰۤؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۝٥٤ وَ اِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ۝٥٥ وَ اِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۝٥٦ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّ
عُيُوْنٍ ۝٥٧ وَّ كُنُوْزٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝٥٨ كَذٰلِكَ ؕ وَ اَوْرَثْنٰهَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۝٥٩ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝٦٠ فَلَمَّا تَرَآءَ
الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰۤى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝٦١ قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ۝٦٢ فَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنِ
اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ۝٦٣ وَ اَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ۝٦٤ وَ اَنْجَيْنَا مُوْسٰى
وَ مَنْ مَّعَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ۝٦٥ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝٦٦ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٦٧ وَ اِنَّ
رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦٨

आयत नं० 52 से 68

और (जब फ़िरऔन इस क़िस्से से भी राह पर नहीं आया और उसने बनी इस्राईल को सताना नहीं छोड़ा तो) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को हुक्म भेजा कि मेरे इन बन्दों को** (यानी बनी इस्राईल को) **रातों रात** (मिस्र से बाहर) **निकाल ले जाओ** (और फ़िरऔन की तरफ़ से) **तुम लोगों का पीछा** (भी) **किया जाएगा(52)** (बस उन्होंने ऐसा ही किया सुबह यह ख़बर मशहूर हुई तो) **फ़िरऔन ने** (पीछा करने के इरादे से आस पास) **शहरों में चपरासी दौड़ा दिये(53)** (और यह कहला भेजा कि) **ये लोग** (यानी बनी इस्राईल हमारे मुक़ाबिले में) **छोटा सा गिरोह है** (इन के मुक़ाबिले से कोई डर नहीं)**(54) और उन्होंने** (अपनी कार्रवाई से) **हम को बहुत गुस्सा दिलाया है** (वो कार्रवाई यह है कि छुप कर चलाकी से निकल गये और बहुत सा ज़ेवर भी हमारा उधार के बहाने से ले गये मतलब यह कि हम को बेवक़ूफ़ बनाकर गये ज़रूर उनका इन्तिज़ाम करना चाहिए)**(55) और हम सब हथियारों से लैस फ़ौज हैं(56) बस** (फ़ौज लेकर पीछे चला इस तरह) **हम ने उन को निकाल बाहर किया बाग़ों से और नहरों से(57) और ख़ज़ानों से और अच्छे मकानों से(58)** (हम ने उन के साथ तो) **ऐसा किया, और उन के बाद बनी इस्राईल को उन** (चीज़ों) **का मालिक बना दिया(59) बस** (एक दिन फ़िरऔनी फ़ौजों ने) **सूरज निकलने के वक़्त उन को पीछे से जा लिया** (यानी नज़दीक पहुंच गये उस वक़्त बनी इस्राईल दरिया से पार उतरने की सोच में थे कि क्या सामान करें)**(60) फिर जब दोनों फ़ौजें** (आपस में ऐसी नज़दीक हुईं कि) **एक दूसरे को देखने लगीं तो मूसा** (अलैहिस्सलाम) **के साथ वाले** (घबराकर) **कहने लगे कि** (ऐ मूसा) **बस हम**

तो पकड़ लिये गये(61) मूसा (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि हरगिज़ नहीं क्योंकि मेरे साथ मेरा रब है वो मुझ को अभी** (दरिया से निकलने का) **रास्ता बता देगा(62) बस हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को हुक्म दिया कि अपने असा को दरिया पर मारो, बस** (उन्होंने उस पर असा मारा जिससे) **वो** (दरिया) **फट** (कर कई हिस्से हो) **गया** (यानी पानी कई जगह से इधर उधर हट कर बीच में बहुत सी सड़कें खुल गईं) **और हर हिस्सा इतना** (बड़ा) **था जैसा बड़ा पहाड़** (ये लोग दरिया में तसल्ली से पार हो गये)**(63) और हमने दूसरे फ़रीक़ को भी उस जगह के नज़दीक पहुंचा दिया** (यानी फ़िरऔन और उस के लोग भी दरिया के नज़दीक पहुंचे रास्ता खुला देख कर सारी फ़ौज अन्दर घुस गई और चारों तरफ़ से पानी सिमटना शुरू हुआ और सारी फ़ौज डूब गई)**(64) और** (अन्जाम क़िस्से का यह हुआ कि) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को और उनके सब साथियों को** (डूबने से) **बचा लिया(65) फिर दूसरों को** (यानी उन के दुशमनों को) **डुबा दिया(66)** (और) **इस क़िस्से में भी बड़ी सीख का सामान है** (कि अल्लाह के हुक्मों और पैग़म्बर की मुख़ालफ़त से किस तरह ख़ुदा का अज़ाब आ सकता है), **और** (फिर भी) **इन** (काफ़िरों) **में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते(67) और आप का रब बड़ा ज़बरदस्त** (ताक़त वाला) **है** (अगर चाहता तो दुनिया में ही उन को अज़ाब देता लेकिन) **बड़ा रहमत वाला** (भी) **है** (इसलिए अपनी रहमत से अज़ाब की मोहलत रख दी बस अज़ाब की देरी से बेफ़िक्र न होना चाहिए)(68)

नोटः- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत को तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि मेरा रब मेरे साथ है वो (दरिया में) रास्ता दे देगा और हिजरत के वक़्त दुशमनों के ख़ौफ़ से तसल्ली देते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ग़ारे सौर में हज़रत अबूबक्र से फ़रमाया कि हमारा रब हमारे साथ है घबराओ नहीं। तो यह इस उम्मत की शान है कि उम्मत के लोग भी ख़ुदा की रहमत में नबी के साथ गिने जाते हैं।

وَ اتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿۶۹﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۷۰﴾ قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا
عٰكِفِيْنَ ﴿۷۱﴾ قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿۷۲﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿۷۳﴾ قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا
كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۴﴾ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿۷۵﴾ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّیْۤ اِلَّا
رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۷﴾ الَّذِیْ خَلَقَنِیْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿۷۸﴾ وَ الَّذِیْ هُوَ يُطْعِمُنِیْ وَ يَسْقِيْنِ ﴿۷۹﴾ وَ اِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿۸۰﴾ وَ
الَّذِیْ يُمِيْتُنِیْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿۸۱﴾ وَ الَّذِیْۤ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِیْ خَطِيْٓـَٔتِیْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿۸۲﴾ رَبِّ هَبْ لِیْ حُكْمًا وَّ

اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿۸۵﴾ وَاغْفِرْ
لِاَبِيْۤ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۸۶﴾ وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿۸۷﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ
بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۹۰﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿۹۱﴾ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ
تَعْبُدُوْنَ ﴿۹۲﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿۹۴﴾ وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ
اَجْمَعُوْنَ ﴿۹۵﴾ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۹۶﴾ تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۹۷﴾ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۸﴾
وَمَاۤ اَضَلَّنَاۤ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۹۹﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿۱۰۰﴾ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿۱۰۱﴾ فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۴﴾

आयत नं० 69 से 104

और (ऐ पैग़म्बर) **आप इन लोगों के सामने इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **का क़िस्सा बयान कीजिए** (ताकि इन को शिर्क की बुराई की दलीलें मालूम हों ख़ासकर इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वास्ते से क्योंकि ये अरब के मुशरिक अपने को इब्राहीमी दीन पर बताते हैं)(69) **जबकि उन्होंने** (यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) **अपनी** (बुत परस्त) **क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की इबादत किया करते हो**(70) **उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत किया करते हैं और हम उन्हीं** (की इबादत) **पर जमे बैठे रहते हैं**(71) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इन को** (अपनी ज़रूरत के वक़्त) **पुकारा करते हो**(72) **या** (तुम जो इन की इबादत करते हो तो क्या) **ये तुम को कुछ नफ़ा पहुंचाते हैं या** (तुम इन की इबादत छोड़ दो तो क्या) **ये तुम को कुछ नुक़सान पहुंचा सकते हैं** (यानी ख़ुदा होने का हक़दार होने के लिए इल्म और क़ुदरत का कमाल तो ज़रूरी है)(73) **उन लोगों ने कहा** (नहीं यह बात तो नहीं) **बल्कि हम ने अपने बड़ों को इसी तरह करते देखा है** (इस लिए हम भी ऐसा ही करते हैं)(74) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि भला तुम ने उन** (की हालत) **को** (ध्यान से) **देखा भी जिन की तुम इबादत किया करते हो**(75) **तुम भी और तुम्हारे पुराने बड़े भी**(76) **ये** (माबूद तो) **मेरे लिए** (यानी तुम्हारे लिए) **नुक़सान वाले हैं** (यानी अगर इन की इबादत की जाए) **मगर हां अल्लाह तआ़ला** (ऐसा है कि वो अपने इबादत करने वालों का दोस्त है और उस की इबादत में सरासर नफ़ा है)(77) **जिसने मुझ को** (और इसी तरह सब को) **पैदा किया फिर वो ही मुझ को** (भलाई की) **राह दिखाता है** (यानी समझ देता

है जिससे नफ़ा नुक़सान को समझता हूं)(78) **और जो कि मुझ को खिलाता पिलाता है**(79) **और जब मैं बीमार हो जाता हूं** (जिसके बाद शिफ़ा हो जाती है) **तो वो ही मुझ को शिफ़ा** (और सहत) **देता है**(80) **और जो मुझ को** (वक़्त पर) **मौत देगा, फिर** (क़ियामत के दिन) **मुझ को ज़िन्दा करेगा**(81) **और जिस से मुझ को यह उम्मीद है कि मेरी ग़लतियों को क़ियामत के दिन मुआफ़ कर देगा**(82) (ये सभी ख़ूबियां इसलिए सुनाई कि क़ौम को अल्लाह तआ़ला की इबादत की दिलचस्पी हो, फिर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करने लगे कि) **या रब मेरे मुझ को हिकमत** (यानी इल्म व अमल में कमाल) **दीजिए और मुझ को** (ऊंचे दर्जे के) **नेक लोगों में शामिल कीजिए** (यानी बड़े पैग़म्बरों में)(83) **और आने वाली नस्लों में मेरा ज़िक्र जारी रखिए** (ताकि मेरे तरीक़े पर चलें जिसमें मुझ को ज़्यादा सवाब मिले)(84) **और मुझे उन लोगों में से बना दे जो नेमतों वाली जन्नत के वारिस होंगे**(85) **और मेरे बाप को** (ईमान की तौफ़ीक़ देकर उस को) **बख़्श दीजिए कि वो गुमराह लोगों में से है**(86) **और जिस दिन सब ज़िन्दा होकर उठेंगे उस दिन मुझ को रूसवा न करना**(87) (आगे उस दिन के बारे में बताते हैं ताकि क़ौम सुने और डरे यानी वो ऐसा दिन होगा) **जिस दिन में कि** (बख़्शिश के लिए) **न माल काम आएगा न औलाद**(88) **मगर हां** (वो बख़्शा जाएगा) **जो अल्लाह के पास** (कुफ़्र व शिर्क से) **पाक दिल लेकर आएगा**(89) **और** (उस दिन) **परहेज़गारों** (यानी ईमान वालों) **के लिए जन्नत नज़दीक कर दी जाएगी** (कि उस को देखें और यह जानकर कि हम इसमें जाएंगे ख़ुश हों)(90) **और इन गुमराहों** (यानी काफ़िरों) **के दोज़ख़ सामने कर दी जाएगी** (कि उस को देख कर दुखी हों कि हम इस में जाएंगे)(91) **और** (उस दिन) **उन** (गुमराहों) **से कहा जाएगा कि वो माबूद कहां गये जिन की तुम इबादत किया करते थे**(92) **अल्लाह को छोड़ कर,** (इस वक़्त) **क्या वो तुम्हारा साथ दे सकते हैं या अपना ही बचाव कर सकते हैं**(93) **फिर** (यह कह कर) **औंधे मुंह दोज़ख़ में डाल दिये जाएंगे वो** (इबादत करने वाले) **लोग और गुमराह लोग**(94) **और इबलीस का सारा गिरोह भी** (बस वो बुत और शैतान न अपने को बचा सके न अपने इबादत करने वालों को)(95) **वो काफ़िर लोग उस दोज़ख़ में बात करते हुए** (उन माबूदों से) **कहेंगे**(96) **कि अल्लाह की क़सम बेशक हम खुली गुमराही में थे**(97) **जब कि तुम को** (इबादत में) **अल्लाह तआ़ला के बराबर करते थे**(98) **और हम को तो बस** (गुमराही फैलाने वाले) **इन बड़े मुजरिमों ने गुमराह किया था**(99) **तो** (अब) **न कोई हमारा सिफ़ारिशी है** (कि छुड़ा ले)(100) **और न कोई सच्चा दोस्त** (कि ख़ाली तसल्ली ही देदे)(101) **सो क्या अच्छा होता कि हम को** (दुनिया में) **फिर वापस जाना मिलता कि हम मुसलमान हो**

जाते(102) (यहां तक इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बयान है आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि) **बेशक इस क़िस्से में** (भी सच्चाई जानने वालों के लिए) **एक सबक़ है** (कि इन बातों को सोचकर तौहीद का ऐतक़ाद करें और क़ियामत के क़िस्से से डरें और ईमान लाएं), **और** (इसके बावजूद) **इन** (मुशरिकों) **में बहुत लोग ईमान नहीं लाते**(103) **और बेशक आप का रब बड़ा ज़बरदस्त रहमत वाला** (है कि अज़ाब दे सकता है मगर मोहलत दे रक्खी) **है**(104)

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ۨالْمُرْسَلِيْنَ ۝۱۰۵ۚۖ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝۱۰۶ۚ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ۝۱۰۷ۙ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ۝۱۰۸ۚ وَ مَاۤ اَسْــٴَـلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝۱۰۹ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ۝۱۱۰ؕ
قَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَ اتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ۝۱۱۱ؕ قَالَ وَ مَا عِلْمِیْ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝۱۱۲ۚ اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّیْ لَوْ
تَشْعُرُوْنَ ۝۱۱۳ۚ وَ مَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِیْنَ ۝۱۱۴ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ۝۱۱۵ؕ قَالُوْا لَىٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ یٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ
الْمَرْجُوْمِیْنَ ۝۱۱۶ؕ قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِیْ كَذَّبُوْنِ ۝۱۱۷ۚۖ فَافْتَحْ بَیْنِیْ وَ بَیْنَهُمْ فَتْحًا وَّ نَجِّنِیْ وَ مَنْ مَّعِیَ مِنَ
الْمُؤْمِنِیْنَ ۝۱۱۸ فَاَنْجَیْنٰهُ وَ مَنْ مَّعَهٗ فِی الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝۱۱۹ۚ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِیْنَ ۝۱۲۰ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَ
مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۝۱۲۱ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ۝۱۲۲ۧ

आयत नं० 105 से 122

नूह (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुटलाया** (क्योंकि एक पैग़म्बर के झुटलाने से सब को झुटलाना ठहरा)(105) **जब कि उन से उन** (की बिरादरी) **के भाई नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि क्या तुम** (अल्लाह से) **नहीं डरते**(106) **मैं तुम्हारा अमानत दार पैग़म्बर** (हूं कि अल्लाह का पैग़ाम हूबहू बिना घटाए बढ़ाए पहुंचा देता) **हूं**(107) **तो तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो**(108) **और मैं इस पर तुम से कोई** (दुनियावी) **बदला** (भी) **नहीं मांगता मेरा बदला तो बस सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **के ज़िम्मे है**(109) **तो** (इसलिए भी) **तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो**(110) **वो लेग कहने लगे कि क्या हम तुम को मानेंगे हालांकि नीचे दर्जे के लोग तुम्हारे साथ हो लिये हैं** (जिन के साथ आने से हम को शर्म आती है और इनके ईमान का भी भरोसा नहीं कि लालच में ऐसा न किया हो)(111) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि उन के काम** (और पेशे) **से मुझ को क्या बहस**(112) (और) **उन से** (ईमान का) **हिसाब-किताब लेना**

(तो) **बस अल्लाह का काम है क्या अच्छा हो कि तुम इस** (बात) **को समझो(113) और** (छोटा पेशा करने वाले) **ईमानदारों को मैं** (तुम्हारे कहने से) **अपने पास से दूर करने वाला नहीं हूं** (चाहे तुम ईमान लाओ या न लाओ मेरा कोई नुक़सान नहीं)(114) **मैं तो साफ़ तौर पर एक डराने वाला हूं** (और हुक्म पहुंचाने के बाद मेरी ज़िम्मेदारी पूरी हो जाती है आगे अपना नफ़ा व नुक़सान तुम ख़ुद देख लो)(115) **वो लोग कहने लगे ऐ नूह अगर तुम** (इस कहने सुनने से) **बाज़ न आओगे तो ज़रूर पत्थर मार-मार कर हलाक कर दिये जाओगे(116)** (बस जब बहुत साल इसी तरह बीत गये तब) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने दुआ की कि या रब मेरे मेरी क़ौम मुझ को** (बराबर) **झुटला रही है(117) सो आप मेरे और उनके बीच** (खुला) **फ़ैसला कर दीजिए** (यानी उन को हलाक कर दीजिए) **और मुझ को और जो ईमानदार मेरे साथ हैं उन को बचा लीजिए(118) तो हम ने** (उन की दुआ क़ुबूल की और) **उन को और जो उन के साथ भरी हुई कशती में** (सवार) **थे उन को बचा लिया(119) फिर उसके बाद बाक़ी लोगों को डुबा दिया(120) इस** (क़िस्से) **में** (भी) **बड़ा सबक़ है, और** (इसके बावजूद) **इन** (काफ़िरों) **में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते(121) और बेशक आप का रब ज़बरदस्त** (ताक़त वाला और) **रहमत वाला** (है कि अज़ाब की क़ुदरत होते हुए उन को मोहलत दे रक्खी) **है(122)**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि इन्सान का शरीफ़ या रज़ील होना उसके अख़लाक़ या आमाल पर है उसके पेशे पर नहीं। माल व दौलत या इज़्ज़त को शराफ़त की बुनियाद समझना ग़लत है।

كَذَّبَتْ عَادُ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ۚ﴿۱۲۳﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۚ﴿۱۲۴﴾ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ۙ﴿۱۲۵﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِیْعُوْنِ ۚ﴿۱۲۶﴾ وَ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ؕ﴿۱۲۷﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِیْعٍ اٰیَةً
تَعْبَثُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَ تَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ۚ﴿۱۲۹﴾ وَ اِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِیْنَ ۚ﴿۱۳۰﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِیْعُوْنِ ۚ﴿۱۳۱﴾ وَ اتَّقُوا الَّذِیْۤ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۚ﴿۱۳۲﴾ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّ بَنِیْنَ ۚۙ﴿۱۳۳﴾ وَ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ۚ﴿۱۳۴﴾ اِنِّیْۤ اَخَافُ
عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ؕ﴿۱۳۵﴾ قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَیْنَاۤ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِیْنَ ۙ﴿۱۳۶﴾ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا خُلُقُ
الْاَوَّلِیْنَ ۙ﴿۱۳۷﴾ وَ مَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِیْنَ ۚ﴿۱۳۸﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳۹﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ۠﴿۱۴۰﴾

आयत नं० 123 से 140

आद की क़ौम ने (भी) **पैग़म्बरों को झुटलाया**(123) **जबकि उन से उन** (की बिरादरी) **के भाई हूद** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि क्या तुम** (अल्लाह से) **डरते नहीं हो**(124) **मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं**(125) **सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो**(126) **और मैं तुम से इस** (तबलीग़) **पर कोई बदला नहीं चाहता बस मेरा बदला तो सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **के ज़िम्मे है**(127) **क्या तुम** (शिर्क के सिवा घमन्ड में भी ऐसे चूर हो कि) **हर ऊंची जगह एक यादगार** (के तौर पर इमारत) **बनाते हो** (ताकि ख़ूब ऊंची दिखाई दे) **जिस को बेज़रूरत बनाते हो**(128) **और** (रहने के मकानों को भी बेज़रूरत) **बड़े-बड़े महल बनाते हो** (हालांकि उससे कम में आराम मिल सकता है) **जैसे दुनिया में तुम को सदा रहना है**(129) **और** (घमन्ड की वजह से ऐसे बेरहम सख़्त दिल हो कि) **जब किसी की पकड़ करते हो बिल्कुल जाबिर** (और ज़ालिम) **बन कर पकड़ करते हो** (इन बुरी आदतों का इसलिए बयान किया गया कि ये बुरी आदतें अक्सर ईमान व ताबेदारी में रूकावट बनती हैं)(130) **सो अल्लाह से डरो और** (चूंकि मैं रसूल हूं इसलिए) **मेरा कहना मानो**(131) **और उस** (अल्लाह) **से डरो** (यानी जिससे डरने को मैं कहता हूं वो ऐसा है) **जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से मदद की जिन को तुम जानते हो**(132) (यानी) **जिसने तुम्हारी मदद की पालतू जानवरों और बेटों से**(133) **और बाग़ों और नहरों से** (इसलिए चाहिए कि ऐसी नेमतें देने वाले के हुक्मों की मुख़ालफ़त न करो)(134) **मुझ को तुम पर एक बड़े सख़्त दिन के अज़ाब का ख़तरा है** (अगर तुम इन हरकतों से बाज़ न आए)(135) **वो लोग बोले कि हमारे नज़दीक तो दोनों बातें बराबर हैं चाहे तुम नसीहत करो और चाहे नसीहत न करो** (यानी हम दोनों हालतों में अपने तरीक़े से बाज़ न आएंगे)(136) **और** (तुम जो कुछ कह रह हो) **ये तो बस पहले लोगों की** (आम) **आदत** (और रस्म) **है** (कि हर ज़माने में लोग पैग़म्बरी का दावा करके लोगों को ऐसा कहते रहे)(137) **और** (तुम जो हम को अज़ाब से डराते हो तो) **हम को हरगिज़ अज़ाब न होगा**(138) **बस उन लोगों ने हूद** (अलैहिस्सलाम) **को झुटलाया तो हम ने उन को** (सख़्त आंधी के अज़ाब से) **हलाक कर दिया, बेशक इस** (क़िस्से) **में** (भी) **बड़ा सबक़ है** (कि हुक्मों की मुख़ालफ़त का क्या अन्जाम हुआ), **और** (इसके बावजूद) **इन** (काफ़िरों) **में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते**(139) **और बेशक आप का रब ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **और रहमत वाला** (हैं कि अज़ाब देने की क़ुदरत रखता है और रहमत से मोहलत भी दे रक्खी) **है**(140)

नोटः- यहां मालूम हुआ कि बिना ज़रूरत के ऊंची इमारत बनाना शरीअत से बुरा है।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٢﴾ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿١٤٤﴾ وَ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٤٥﴾ اَتُتْرَكُوْنَ فِیْ مَا هٰهُنَاۤ
اٰمِنِیْنَ ﴿١٤٦﴾ فِیْ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿١٤٧﴾ وَّ زُرُوْعٍ وَّ نَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِیْمٌ ﴿١٤٨﴾ وَ تَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا فٰرِهِیْنَ ﴿١٤٩﴾
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾ وَ لَا تُطِیْعُوْۤا اَمْرَ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿١٥١﴾ الَّذِیْنَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ وَ لَا یُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوْۤا
اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِیْنَ ﴿١٥٣﴾ مَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖۚ فَاْتِ بِاٰیَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ
لَّهَا شِرْبٌ وَّ لَكُمْ شِرْبُ یَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾ وَ لَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَیَاْخُذَكُمْ عَذَابُ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿١٥٦﴾ فَعَقَرُوْهَا
فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِیْنَ ﴿١٥٧﴾ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿١٥٨﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ
الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ﴿١٥٩﴾

आयत नं० 141 से 159

समूद की क़ौम ने (भी) **पैग़म्बरों को झुटलाया(141) जब कि उन से उन के भाई सालिह** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा क्या तुम** (अल्लाह से) **डरते नहीं(142) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं(143) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो(144) और मैं तुम से इस पर कुछ बदला नहीं चाहता बस मेरा बदला तो सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **के ज़िम्मे है(145)** (और तुम जो ख़ुशहाली की वजह से अल्लाह को भूल रहे हो तो) **क्या तुम को इन ही चीज़ों में बेफ़िक्री से रहने दिया जएगा जो यहां** (दुनिया में) **मौजूद हैं(146)** (यानी) **बाग़ों में और नहरों में(147) और खेतों में और इन खजूरों में जिन के गुच्छे ख़ूब भरे हुए हैं** (यानी इन खजूरों में बहुत फल आता है)**(148) और क्या** (इस बेपरवाई की वजह से) **तुम पहाड़ों को तराश-तराश कर इतराते** (और घमन्ड करते) **हुए घर बनाते हो(149) सो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो(150) और उन** (बन्दगी की) **हदों से निकल जाने वालों का कहना मत मानो(151) जो ज़मीन में फ़साद किया करते हैं और** (कभी) **सुधार** (की बात) **नहीं करते** (मुराद काफ़िरों के अमीर लोग हैं जो गुमराही पर लोगों को उकसाते थे)**(152) उन लोगों ने कहा कि तुम पर तो किसी ने बड़ा भारी जादू कर दिया है** (जिससे अक़्ल में ख़राबी आ गई है कि पैग़म्बरी का दावा करते हो)**(153) तुम तो बस हमारी तरह के एक** (आम) **आदमी हो,** (और आदमी नबी होता नहीं) **सो कोई निशानी** (और मोजिज़ा) **लाओ अगर तुम** (पैग़म्बरी के दावे में) **सच्चे हो(154) सालिह** (अलैहिस्सलाम)

ने कहा कि यह एक ऊंटनी है (जिस की पैदाइश मोजिज़ा है और यह मेरी पैग़म्बरी की दलील है खुद इसके भी कुछ हक़ हैं उन में से एक यह है कि) **पानी पीने के लिए एक बारी इस की और एक तय दिन में एक बारी तुम्हारी** (यानी तुम्हारे जानवरों की)(155) **और** (एक यह है कि) **इस को बुराई** (और सताने के इरादे) **के साथ हाथ भी मत लगाना कभी तुम को एक भारी दिन का अज़ाब आ पकड़े**(156) **सो उन्होंने** (न पैग़म्बरी की तस्दीक की न ऊंटनी के हक़ अदा किये बल्कि) **उस ऊंटनी को मार डाला फिर** (जब अज़ाब के निशान दिखाई दिये तो अपनी हरकत पर) **पछताए** (मगर एक तो अज़ाब देख लेने के वक़्त पछताना बेकार दूसरे ख़ाली पछतावे से क्या होता है जब तौबा व ईमान न हो)(157) **फिर** (आख़िर) **अज़ाब ने उन को आ पकड़ा, बेशक इस** (क़िस्से) **में बड़ा सबक़ है, और** (इसके बावजूद) **इन** (काफ़िरों) **में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते**(158) **और बेशक आप का रब बड़ा ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **रहमत वाला** (है कि क़ुदरत के बावजूद अपनी रहमत से मोहलत देता) **है**(159)

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि अच्छा पेशा भी ख़ुदा तआला का इनआम है और उस से नफ़ा उठाना जाइज़ है ऐसे ही गुनाह के कामों वाला पेशा करना नाजाइज़ है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۣالْمُرْسَلِيْنَ ۝١٦٠ۚۖ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٦١ۚ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝١٦٢ۙ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ۝١٦٣ۚ وَ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٦٤ؕ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ
الْعٰلَمِيْنَ ۝١٦٥ۙ وَ تَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ۝١٦٦ قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ
يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ۝١٦٧ قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ۝١٦٨ؕ رَبِّ نَجِّنِيْ وَ اَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝١٦٩
فَنَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ۝١٧٠ۙ اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ۝١٧١ۚ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝١٧٢ۚ وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ
فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝١٧٣ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٧٤ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ۝١٧٥ۧ

आयत नं० 160 से 175

क़ौमे लूत ने (भी) **पैग़म्बरों को झुटलाया**(160) **जबकि उन से उनके भाई लूत** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि क्या तुम** (अल्लाह से) **डरते नहीं हो**(161) **मैं तुम्हारा अमानतदार**

पैग़म्बर हूं(162) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो(163) और मैं तुम से इस (काम) पर कोई बदला नहीं चाहता बस मेरा बदला तो सारे जहानों के रब (अल्लाह) के ज़िम्मे है(164) क्या सारी दुनिया जहान वालों में से तुम (यह हरकत करते हो कि) मर्दों से बुरा काम करते हो(165) और तुम्हारे रब ने जो तुम्हारे लिए बीवियां पैदा की हैं उन को छोड़े बैठे हो (यानी और कोई आदमी तुम्हारे सिवा यह बुरा काम नहीं करता) बल्कि (असल बात यह है कि) तुम (इन्सानियत की) हद से बढ़ जाने वाले हो(166) वो लोग कहने लगे कि ऐ लूत अगर तुम (हमें कहने-सुनने से) बाज़ नहीं आओगे तो ज़रूर (बस्ती से) निकाल दिये जाओगे(167) लूत (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि (मैं इस धमकी पर अपने कहने से न रूकूंगा क्योंकि) मैं तुम्हारे इस काम से सख़्त नफ़रत रखता हूं(168) (जब किसी तरह उन लोगों ने न माना और अज़ाब आता हुआ मालूम हुआ तो) लूत (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की कि या रब मेरे मुझ को और मेरे (ख़ास) ताल्लुक़ वालों को उन के इस काम (की मुसीबत) से (जो उन पर आने वाली है) बचा लीजिए(169) तो हम ने उन को और उन के ताल्लुक़ वालों को सब को बचा लिया(170) सिवाए एक बुढ़िया के कि वो (अज़ाब के अन्दर) रह जाने वालों में रह गई(171) फिर हम ने और सब को (जो लूत अलैहिस्सलाम और उनके घर वालों के सिवा थे) हलाक कर दिया(172) और हम ने उन पर एक ख़ास क़िस्म की (यानी पत्थरों की) बारिश बरसा दी, तो क्या बुरी बारिश थी जो उन लोगों पर बरसी जिन को (अल्लाह के अज़ाब से) डराया गया था(173) बेशक इस (क़िस्से) में (भी) सबक़ है, और (फिर भी) इन (काफ़िरों) में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते(174) और बेशक आप का रब बड़ी क़ुदरत वाला बड़ी रहमत वाला है (कि अज़ाब दे सकता था मगर अभी नहीं दिया)(175)

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे आदमी पर लानत की है जो अपनी बीवी से ग़लत काम करता है यानी पीछे के रास्ते से सोहबत करता तो लड़कों से यह बुरा काम तो कितना बड़ा गुनाह होगा। (रूह)

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٧٦ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٧٧ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝١٧٨ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَ اَطِيْعُوْنِ ۝١٧٩ وَ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٨٠ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَ لَا تَكُوْنُوْا مِنَ
الْمُخْسِرِيْنَ ۝١٨١ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۝١٨٢ وَ لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَ لَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ

مُفْسِدِينَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٨٤﴾ قَالُوا إِنَّمَا أَنتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٨٥﴾ وَمَا أَنتَ إِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُنَا وَإِن نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿١٨٦﴾ فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ
رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٨٩﴾ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾

आयत नं० 176 से 191

ऐका के रहने वालों ने (भी) **पैग़म्बरों को झुटलाया** (जिन का ज़िक्र सूरत हिज्र में आ चुका है)(176) **जब कि उन से शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि क्या तुम** (अल्लाह से) **डरते नहीं हो(177) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं(178) तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो(179) और मैं तुम से इस पर कोई बदला नहीं चाहता बस मेरा बदला तो सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **के ज़िम्मे है(180) तुम लोग पूरा नापा करो और** (हक़दार का) **नुक़सान मत किया करो(181) और** (इसी तरह तोलने की चीज़ों में) **सीधी तराज़ू से तौला** (करो यानी कम न तौला) **करो(182) और लोगों को उन की चीज़ों में नुक़सान न दिया करो और ज़मीन में फ़साद मत मचाया करो(183) और उस** (अल्लाह) **से डरो जिस ने तुम को और सभी पहले लोगों को पैदा किया(184) वो लोग कहने लगे कि बस तुम पर तो किसी ने बड़ा भारी जादू कर दिया है** (जिससे अक़्ल ख़राब हो गई और पैग़म्बरी का दावा करने लगे)(185) **और तुम तो सिर्फ़ हमारी तरह** (के) **एक** (आम) **आदमी हो और हम तो तुम को झूटे लोगों में से समझते हैं(186) सो अगर तुम सच्चों में से हो तो हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो** (ताकि हम को मालूम हो जाए कि सचमुच तुम नबी थे तुम्हारे झुटलाने से हम को यह सज़ा हुई)(187) **शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **बोले कि** (मैं अज़ाब का लाने वाला या उसकी सूरत तय करने वाला कौन हूं) **तुम्हारे कामों को मेरा रब** (ही) **अच्छी तरह जानता** (है और उस काम की सज़ा में कब अज़ाब हो और कैसा अज़ाब हो उस को भी वो ही जानता है उसके ही बस में) **है(188) बस वो लोग** (बराबर) **उनको झुटलाते रहे फिर उनको सायबान वाले दिन के अज़ाब ने आ पकड़ा, बेशक वो बड़े सख़्त दिन का अज़ाब था(189)** (और) **इस** (क़िस्से) **में** (भी) **बड़ा सबक़ है, और** (फिर भी) **इन** (काफ़िरों) **में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते(190) और बेशक आप का रब बड़ी क़ुदरत वाला बड़ी रहमत वाला** (है कि अज़ाब भेज सकता है मगर मोहलत दे रक्खी) **है(191)**

नोटः- सायबान वाले दिन का अज़ाब यह है कि अल्लाह तआला ने उस क़ौम पर सख़्त गर्मी भेजी कि न मकान के अन्दर चैन आता था न बाहर फिर उन के पास जंगल में एक घना बादल भेज दिया जिस के नीचे ठंडी हवा थी सारी क़ौम गर्मी से परीशान थी सब दौड़-दौड़ कर उस बादल के नीचे जमा हो गये जब सारी क़ौम बादल के नीचे आ गई तो उस बादल ने उन पर पानी के बजाए आग बरसा दी जिससे सब भस्म हो कर रह गये। (रूह)

وَ اِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۹۲﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿۱۹۳﴾ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ
مُّبِيْنٍ ﴿۱۹۵﴾ وَ اِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۹۶﴾ اَوَ لَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۹۷﴾ وَ لَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى
بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿۱۹۸﴾ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹۹﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۲۰۰﴾ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۲۰۱﴾ فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۰۲﴾ فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ
مُنْظَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۲۰۴﴾ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿۲۰۵﴾ ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿۲۰۶﴾ مَآ
اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ﴿۲۰۷﴾ وَ مَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿۲۰۸﴾ ذِكْرٰى وَ مَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۲۰۹﴾ وَ مَا
تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿۲۱۰﴾ وَ مَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَ مَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿۲۱۱﴾ اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿۲۱۲﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ
اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿۲۱۳﴾

आयत नं० 192 से 213

और बेशक यह कुरआन सारे जहानो के रब (अल्लाह) **का भेजा हुआ है**(192) **इस को अमानतदार फ़रिशता लेकर आया है**(193) (ऐ पैग़म्बर) **आप के दिल पर** (उतरा है) **ताकि आप** (भी) **डराने वालों** (यानी पैग़म्बरों) **में से हो जाएं**(194) (और ऐसी) **साफ़ अरबी ज़बान में** (उतरा कि समझ में आ जाए)(195) **और इस** (कुरआन) **का ज़िक्र पहली उम्मतों की** (आसमानी) **किताबों में** (भी) **है** (कि ऐसी शान का पैग़म्बर होगा और उस पर ऐसा कलाम उतरेगा)(196) **क्या इन लोगों के लिए यह बात दलील नहीं है कि इस** (के नाज़िल होने की ख़बर) **को बनी इस्राईल के आलिम** (पहले से) **जानते हैं**(197) **और अगर** (मान लो) **हम इस** (कुरआन) **को किसी अजमी** (ग़ैर अरबी) **पर उतार देते**(198) **फिर वो** (अजमी) **उनके सामने उस को पढ़ भी देता** (जिससे उस का मोजिज़ा होना और साफ़ हो जाता कि ज़बान भी नहीं जानता लेकिन) **ये लोग** (ज़िद की वजह

से) **तब भी उस को न मानते**(199) (आगे हुज़ूर की तसल्ली के लिए उन के ईमान न लाने से नाउम्मीदी दिलाते हैं यानी) **हम ने इसी तरह** (सख़्ती के साथ) **इस ईमान न लाने को इन नाफ़रमानों के दिलों में डाल रक्खा है**(200) **ये लोग इस** (कुरआन) **पर ईमान न लाएंगे जब तक कि सख़्त अज़ाब को** (मरने के वक़्त या आख़रत में) **न देख लेंगे**(201) **जो अचानक उन के सामने आखड़ा होगा और उन को** (पहले से) **ख़बर भी न होगी**(202) **फिर** (उस वक़्त जान को बनेगी तो) **कहेंगे कि क्या** (किसी तरह) **हम को** (कुछ) **मोहलत मिल सकती** (है लेकिन वो वक़्त न मोहलत का है न ईमान कुबूल होने का) **है**(203) **क्या** (हमारी धमकियों को सुनकर) **ये लोग हमारे अज़ाब की जल्दी चाहते हैं** (जिस का मंशा इनकार है)(204) **ज़रा बताओ तो अगर हम इन को** (कुछ सालों तक) **ऐश में रहने दें**(205) **फिर जिस** (अज़ाब) **का उन से वादा है वो उन के सर आपड़े**(206) **तो उन का वो ऐश किस काम आ सकता** (है यह ऐश की जो मोहलत दी गई उससे उन का अज़ाब हल्का या कम नहीं हो सकता) **है**(207) **और** (यह मोहलत देने में कुछ भेद हैं इसलिए पहली उम्मतों को भी मुहलत मिली है जैसा कि) **जितनी बस्तियां** (काफ़िरों की) **हम ने** (अज़ाब से) **हलाक की हैं सब में डराने वाले** (पैग़म्बर) **आए**(208) **नसीहत के लिए** (जब न माने तो अज़ाब आया), **और हम ज़ुल्म करने वाले नहीं**(209) **और** (यह अल्लाह का भेजा हुआ कलाम है और) **इस को शैतान** (जो काहिनों के पास आया करते थे) **लेकर नहीं आए** (जैसा कि काफ़िरों ने इल्ज़ाम दिया था)(210) **और यह** (कुरआन) **उन** (की हालत) **के हिसाब से ही नहीं** (क्योंकि कुरआन सब का सब हिदायत और शैतान सब का सब गुमराही है) **और न वो ऐसा कर सकते हैं**(211) **क्योंकि वो शैतान** (आसमानी वही) **सुनने से रोक दिये गये हैं**(212) **सो** (ऐ पैग़म्बर) **तुम अल्लाह के साथ किसी और माबूद की इबादत मत करना कभी तुम को सज़ा होने लगे** (नऊज़ुबिल्लाह आप तो इन बातों से पाक हैं उम्मत को सुनाना है)(213)

नोटः- नमाज़ में फ़र्ज़ तिलावत की जगह कुरआन के लफ़्ज़ों का किसी ज़बान उर्दू या अग्रेंज़ी में पढ़ लेना जाइज़ नहीं। इसी तरह कुरआन का सिर्फ़ तरजमा बिना अरबी मतन के लिखा जाए तो उस को उस ज़बान का कुरआन कहना जाइज़ नहीं जैसे आजकल बहुत से लोग सिर्फ़ उर्दू तरजमे को उर्दू का कुरआन कह देते हैं यह नाजाइज़ और बेअदबी है। कुरआन को बिना अरबी मतन के छापना और ख़रीदना बेंचना सब नाजाइज़ है।

وَ اَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿۲۱۴﴾ وَ اخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۱۵﴾ فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّیْ
بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۱۶﴾ وَ تَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِیْزِ الرَّحِیْمِ ﴿۲۱۷﴾ الَّذِیْ یَرٰىكَ حِیْنَ تَقُوْمُ ﴿۲۱۸﴾ وَ تَقَلُّبَكَ فِی السّٰجِدِیْنَ ﴿۲۱۹﴾
اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۲۲۰﴾ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّیٰطِیْنُ ﴿۲۲۱﴾ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِیْمٍ ﴿۲۲۲﴾ یُّلْقُوْنَ
السَّمْعَ وَ اَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿۲۲۳﴾ وَ الشُّعَرَآءُ یَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿۲۲۴﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِیْ كُلِّ وَادٍ یَّهِیْمُوْنَ ﴿۲۲۵﴾ وَ اَنَّهُمْ
یَقُوْلُوْنَ مَا لَا یَفْعَلُوْنَ ﴿۲۲۶﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ ذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّ انْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ
وَ سَیَعْلَمُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْنَ ﴿۲۲۷﴾

आयत नं० 214 से 227

और (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन बातों से सबसे पहले) **अपने नज़दीकी ख़ानदान वालों को डराइये** (जैसा कि आपने ऐसा ही किया)(214) **और उन लोगों के साथ** (तो महरबानी और) **नर्मी से पेश आइये जो मुसलमानों में दाख़िल होकर आप की राह पर चलें** (चाहे ख़ानदान के हों या ग़ैर ख़ानदान के हों)(215) **और अगर ये लोग** (जिन को आपने नसीहत की है) **आप का कहा न मानें** (और कुफ़्र पर जमे रहें) **तो आप** (साफ़) **कह दीजिए कि मैं तुम्हारे कामों से नफ़रत रखता हूं**(216) **और** (मुख़ालिफ़ों से न डरिए और) **अल्लाह महरबान पर भरोसा रखिए**(217) **जो आप को देखता है जिस वक़्त कि आप** (नमाज़ के लिए) **खड़े होते हैं**(218) **और** (ऐसे ही नमाज़ शुरू करने के बाद) **नमाज़ियों के साथ आप के उठने बैठने को भी** (देखता है)(219) **वो ख़ूब सुनने वाला ख़ूब देखने वाला** (और रखवाला) **है**(220) (ऐ पैग़म्बर लोगों से कह दीजिए कि) **क्या मैं तुम को बताऊं किस पर शैतान उतरा करते हैं**(221) (सुनो) **ऐसे लोगों पर उतरा करते हैं जो** (पहले से) **झूटे बड़े बदकिरदार हों**(222) **और जो** (शैतानों से) **सुनी सुनाई बातें करते हैं और** (लोगों से उन बातों को बयान करने के वक़्त) **वो बहुत झूट बोलते हैं**(223) **और** (आप शाइर भी नहीं है जैसा कि काफ़िर लोग कहते थे क्योंकि) **शाइरों की राह तो बेराह लोग चला करते हैं** (मुराद राह से शाइरी करना है)(224) **क्या आप नहीं जानते कि वो** (शाइर) **लोग** (बातों की सोच के) **हर मैदान में भटकते फिरा करते हैं**(225) **और** (जब कुछ तुकबन्दी कर लेते हैं जो अक्सर सच्चाई से परे की बातें होती हैं इसलिए) **ज़बान से वो बातें कहते हैं जो करते नहीं**(226) **हां मगर जो लोग** (इन शाइरों में से) **ईमान लाए और अच्छे काम किये** (यानी शरीअत के ख़िलाफ़ उन की बातें नहीं) **और उन्होंने** (अपने शेरों में) **कसरत से अल्लाह का ज़िक्र किया** (यानी दीन

की हिमायत और इल्म फैलाने में उन के शेर हैं कि ये सब अल्लाह के ज़िक्र में दाख़िल हैं) **और** (अगर किसी शेर में कोई नामुनासिब बात भी है जैसे किसी की बुराई तो उस की वजह भी यह है कि) **उन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद** (उसका) **बदला लिया** (है यानी पहले काफ़िरों और फ़ासिक़ों ने उन को ज़बानी तकलीफ़ पहुंचाई जैसे उन की या दीन की तौहीन की या उन के माल को या जान को नुक़सान पहुंचाया तो बदले में ऐसे शेर कहे हैं)**, और जल्दी ही उन लोगों को मालूम हो जाएगा जिन्होंने** (अल्लाह के हक़ रसूल के हक़ या बन्दों के हक़ में) **ज़ुल्म कर रक्खा है कि** (बुरी और मुसीबत की) **जगह उन को लौट कर जाना** (है मुराद इससे जहन्नम) **है**(227)

नोटः- शाइरी हर सूरत में बुरी नहीं बल्कि जिन शेरों में अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी, झूट या किसी इन्सान की तौहीन या बेहयाई की बातें हों वो बुरे और नाजाइज़ हैं। और जिन शेरों में ये गुनाह की बातें न हों वो जाइज़ हैं। और कुछ शेरों में तो नसीहत की बातें होती हैं वो सवाब में दाख़िल हैं।

27-सूरत-नम्ल

इस मक्की सूरत में '7' रूकू और '93' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَ كِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿۱﴾ هُدًى وَّ بُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۴﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَ هُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿۵﴾ وَ اِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ
حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿۶﴾

आयत नं० 01 से 06

तासीन (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है) **ये कुरआन की और** (हुक्मों को) **साफ़-साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं(01) ये** (आयतें) **ईमान वालों के लिए सही रास्ता दिखाने वाली और** (उस राह पर चलने पर अच्छे बदले की) **ख़ुशख़बरी सुनाने वाली हैं(02) जो** (मुसलमान) **ऐसे हैं कि** (काम भी नेक करते हैं जैसा कि) **नमाज़ की पाबन्दी करते हैं** (जो कि बदनी इबादतों में सब से बड़ी है) **और ज़कात देते हैं** (जो कि माली इबादतों में सबसे बड़ी है) **और** (अक़ीदा भी उन का ठीक है यानी) **वो आख़रत पर पूरा यक़ीन रखते** (हैं ये तो ईमान वालों की ख़ूबियां) **हैं(03)** (और) **जो लोग आख़रत पर ईमान नहीं रखते हम ने उन के** (बुरे) **काम उन की नज़र में अच्छे करके दिखा रक्खे हैं सो वो** (अपनी जहालत में हक़ से दूर) **भटकते फिरते** (हैं तो जैसे उनके न अक़ीदे ठीक हैं न काम इसलिए वो कुरआन को भी नहीं मानते) **हैं(04) ये वो लोग हैं जिन के लिए** (दुनिया में मरने के वक़्त भी) **सख़्त अज़ाब** (होने वाला) **है और वो लोग आख़रत में** (भी) **बड़े नुक़सान में हैं** (कि कभी छुटकारा ही न होगा)**(05) और** (चाहे ये काफ़िर कुरआन को न मानें मगर ऐ पैग़म्बर) **आप को बेशक एक बड़ी हिकमत वाले इल्म वाले की तरफ़ से कुरआन दिया जा रहा है** (आप इस नेमत की ख़ुशी में उन के इनकार से ग़म न कीजिए)(06)

नोटः- जो लोग आख़रत पर ईमान नहीं रखते उन को उनके बुरे काम अच्छे लगते हैं इसलिए वो उन्हीं कामों को दिलचस्पी से करते रहते हैं।

اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖۤ اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِیْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِیْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝۷ فَلَمَّا
جَآءَهَا نُوْدِیَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِی النَّارِ وَ مَنْ حَوْلَهَا ؕ وَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝۸ یٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِیْزُ
الْحَكِیْمُۙ ۝۹ وَ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّ لَمْ یُعَقِّبْ ؕ یٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۫ اِنِّیْ لَا
یَخَافُ لَدَیَّ الْمُرْسَلُوْنَ ۝۱۰ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّیْ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝۱۱ وَ اَدْخِلْ یَدَكَ فِیْ
جَیْبِكَ تَخْرُجْ بَیْضَآءَ مِنْ غَیْرِ سُوْٓءٍ ۫ فِیْ تِسْعِ اٰیٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ قَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِیْنَ ۝۱۲ فَلَمَّا
جَآءَتْهُمْ اٰیٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ ۝۱۳ وَ جَحَدُوْا بِهَا وَ اسْتَیْقَنَتْهَاۤ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّ عُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ
كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِیْنَ ۝۱۴

आयत नं० 07 से 14

(उस वक़्त का क़िस्सा ज़िक्र कीजिए) **जब कि मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (मदयन से आते हुए रास्ता भूल जाने पर सर्दी की रात में) **अपने घरवालों से कहा कि मैंने** (तूर पहाड़ की तरफ़) **आग देखी है, मैं अभी** (जाकर) **वहां से** (या तो रास्ते की) **कोई ख़बर लाता हूं या तुम्हारे पास** (वहां से) **आग का कोई अंगारा लाता हूं ताकि तुम सेंक लो(07) सो जब उस** (आग) **के पास पहुंचे तो उन को** (अल्लाह की तरफ़ से) **आवाज़ दी गई कि जो इस आग के अन्दर हैं** (यानी फ़रिशते) **उन पर भी बरकत हो और जो इस** (आग) **के पास है** (यानी मूसा) **उन पर भी** (बरकत हो यह सलाम के तौर पर है)**, और** (आग की सूरत में जो यह नूर है यह अल्लाह की ज़ात नहीं बल्कि) **अल्लाह सारे जहानों का रब** (तो रंगो और हदों से) **पाक है(08)** (हुक्म हुआ कि) **ऐ मूसा बात यह है कि मैं** (जो बोल रहा हूं) **अल्लाह हूं ज़बरदस्त** (क़ुदरत व) **हिकमत वाला(09) और** (ऐ मूसा) **तुम अपना असा** (ज़मीन पर) **डाल दो** (बस उन्होंने डाल दिया तो वो अज़्दहा यानी अजगर बन कर लहराने लगा)**, तो जब उन्होंने उस को इस तरह हरकत करते देखा जैसे सांप हो तो वो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड कर भी तो न देखा,** (कहा गया कि) **ऐ मूसा डरो नहीं** (क्योंकि हम ने तुम को पैग़म्बरी देदी है) **और हमारे सामने** (यानी पैग़म्बरी मिलने के वक़्त) **पैग़म्बर** (ऐसी चीज़ों से जो कि ख़ुद उसकी पैग़म्बरी की दलील यानी मोजिज़े हों) **नहीं डरा करते** (यानी तुम को भी न डरना चाहिए)**(10) हां मगर जिससे कोई ग़लती हो जाए** (और वो उस को याद करके डरे तो हरज नहीं लेकिन अगर) **फिर बुराई** (हो जाने) **के बाद बुराई की जगह**

अच्छे काम करे (तौबा करे) **तो मैं** (उस को भी मुआफ़ कर देता हूं क्योंकि मैं) **बख़्शने वाला रहमत वाला हूं** (यह इस लिए बता दिया कि कभी फ़िरऔनी को मारने का क़िस्सा याद करके परीशान हों इसलिए इससे भी तसल्ली कर दी ताकि घबराहट जाती रहे)(11) **और** (ऐ मूसा एक और मोजिज़ा दिया जाता है वो यह कि) **तुम अपना हाथ गरीबान के अन्दर ले जाओ** (और फिर निकालो तो) **वो बिना किसी बीमारी के** (बहुत) **चमकदार हो कर निकलेगा,** (और ये दोनो मोजिज़े उन) **नौ मोजिज़ों में से हैं** (जिन के साथ तुम को) **फ़िरऔन और उस की क़ौम की तरफ़** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा जाता है,** (क्योंकि) **वो बड़े हद से निकल जाने वाले लोग हैं**(12) **बस जब उन लोगों के पास हमारे** (दिये हुए) **मोजिज़े पहुंचे** (जो) **बहुत साफ़** (और खुले) **थे** (यानी शुरू में दो मोजिज़े दिखाए गये फिर वक़्त पर बाक़ी दिखाए जाते रहे) **तो वो लोग** (उन सब को देख कर भी) **बोले यह** (तो) **खुला जादू है**(13) **और** (सितम तो यह था कि) **ज़ुल्म और घमन्ड की वजह से उन** (मोजिज़ों) **का इनकार किया हालांकि** (अन्दर से) **उन के दिलों ने उन का यक़ीन कर लिया था, सो देखिए कैसा** (बुरा) **अन्जाम हुआ उन फ़साद करने वालों का** (कि दुनिया में डुबोए गये और आख़रत में जलने की सज़ा पाई)(14)

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَ قَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵﴾ وَ
وَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَ قَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَ اُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ
الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۶﴾ وَ حُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ وَ الطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا عَلٰى
وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَ جُنُوْدُهٗ ۙ وَ هُمْ لَا
يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۸﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَ عَلٰى وَالِدَيَّ
وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَ اَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۹﴾

आयत नं० 15 से 19

और हम ने दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) **और सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **को** (शरीअत और हुकूमत का) **इल्म दिया और उन दोनो ने** (शुक्र अदा करने के लिए) **कहा कि सारी तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला की हैं जिसने हम को अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर बड़ाई दी**(15) **और दाऊद**

(अलैहिस्सलाम की जगह उन) **के वारिस सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **हुए** (यानी उन को हुकूमत मिली) **और उन्होंने** (शुक्र करते हुए) **कहा कि ऐ लोगो हम को परिन्दों की बोली को** (समझना) **सिखाया गया है** (जो दूसरे बादशाहों को नहीं आता) **और हम को** (हुकूमत के सामान में) **हर क़िस्म की** (ज़रूरी) **चीज़ें दी गईं हैं** (जैसे फ़ौज, माल और जंगी असलहा), **सचमुच यह** (अल्लाह तआ़ला की) **खुली महरबानी है(16) और सुलेमान** (अलैहिस्सलाम के पास हुकूमत का सामान भी अजीब ग़रीब था जैसा कि उन) **के लिए** (जो) **उन का लशकर जमा किया गया** (था उन में) **जिन्नात भी** (थे) **और इन्सान भी और परिन्दे भी** (जो किसी बादशाह के ताबे नहीं होते) **और** (इतने ज़्यादा थे कि) **उन को** (चलने के वक़्त) **रोका जा**(या कर)**ता था** (ताकि बिछड़ न जाएं पीछे वाले भी पहुंच जाएं)(17) **यहां तक कि** (एक बार अपनी फ़ौज के साथ कहीं जा रहे थे) **जब वो चींटियों के एक मैदान में आए तो एक चींटी ने** (दूसरी चींटियों से) **कहा कि ऐ चींटियों अपने-अपने घरों में जा घुसो कहीं तुम को सुलेमान और उनकी फ़ौज अन्जाने में कुचल न डाले(18) सो सुलेमान** (अलैहिस्सलाम ने उसकी बात सुनी और) **उसकी बात से** (हैरान हो कर कि इस छोटे से वजूद पर यह होशियारी) **मुस्कुराते हुए हंस पड़े और** (अल्लाह की इस नेमत पर कि बोली समझ गये) **कहने लगे कि या रब मेरे मुझ को इस का पाबन्द बना दीजिए कि मैं आप की उन नेमतों का शुक्र किया करूं जो आपने मुझ को और मेरे मां बाप को दी हैं** (यानी ईमान और इल्म सब को और पैग़म्बरी ख़ुद को और अपने वालिद दाऊद अलैहिस्सलाम को) **और** (इस पर भी पाबन्दी दीजिए कि) **मैं नेक काम किया करूं जिससे आप ख़ुश हों** (यानी मेरे काम क़ुबूल हों) **और मुझ को अपनी रहमत से अपने** (ऊंचे दर्जे के) **नेक बन्दों** (पैग़म्बरों) **में दाख़िल रखिए** (यानी नज़दीकी के बाद दूरी न हो)(19)

नोटः- जानवरों और परिन्दों में भी समझ होती है मगर इस दर्जे की नहीं कि उन को शरीअत के हुक्मों का पाबन्द बनाया जाता।

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ أَرَى الْهُدْهُدَ ۖ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِينَ ﴿٢٠﴾ لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ
لَأَاذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِّي بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ
بِنَبَإٍ يَّقِينٍ ﴿٢٢﴾ إِنِّي وَجَدتُّ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدتُّهَا وَقَوْمَهَا
يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٤﴾

اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِىْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ السجدة قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِىْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ
ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

आयत नं० 20 से 28

और (एक बार यह क़िस्सा हुआ कि) **सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने परिन्दों की हाज़िरी ली तो** (हुदहुद को न देखा) **कहने लगे कि क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देखता क्या कहीं ग़ाइब हो गया है(20)** (और जब पता चला कि असलीयत में ग़ाइब है तो कहने लगे कि) **मैं उस को** (ग़ैर हाज़िरी पर) **सख़्त सज़ा दूंगा या उस को ज़बह कर डालूंगा या वो कोई साफ़ दलील** (और ग़ैर हाज़िरी की मजबूरी) **मेरे सामने पेश कर दे** (तो ख़ैर छोड़ दूंगा)**(21) थोड़ी देर बाद वो आ गया और सुलेमान** (अलैहिस्सलाम से) **कहने लगा कि ऐसी बात मालूम करके आया हूं जो आप को मालूम नहीं हुई** (और वो यह कि) **मैं आप के पास सबा के क़बीले की पक्की ख़बर लाया हूं(22) मैंने एक औरत को देखा** (जिस का नाम बिलक़ीस है) **कि वो उन लोगों पर हुकूमत कर रही है और उस को** (हुकूमत का) **हर क़िस्म का साज़ो सामान मिला है और उसके पास एक बड़ा** (शानदार) **तख़्त** (यानी शाही कुर्सी) **है(23)** (और मज़हबी हालत उन की यह है कि) **मैंने उस** (औरत) **को और उस की क़ौम को देखा कि वो अल्लाह** (की इबादत) **को छोड़ कर सूरज को सजदा करते हैं और शैतान ने उन के** (कुफ़्र के उन) **कामों को उनकी नज़र में अच्छा दिखा रक्खा है** (इस तरह) **उन को** (सही) **रास्ते से रोक रक्खा है इसलिए वो** (सही) **रास्ते पर नहीं चलते(24) कि उस अल्लाह को सजदा नहीं करते जो** (ऐसा क़ुदरत वाला है कि) **आसमान और ज़मीन की छुपी चीज़ों को** (जैसे बारिश और पौधे) **बाहर लाता है और** (ऐसा जानने वाला है कि) **तुम लोग जो कुछ** (दिल में) **छुपा रखते हो और जो कुछ दिखाते हो वो सब को जानता है(25)** (इसलिए) **अल्लाह ही ऐसा है कि उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और वो बड़े अर्श का मालिक है(26) सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने** (यह सुनकर) **कहा कि हम अभी देख लेते हैं कि तू सच कहता है या तू झूटों में से है(27)** (अच्छा) **मेरा यह ख़त लेजा और उसको उनके पास डाल देना फिर** (ज़रा वहां से) **हट जाना फिर देखना कि आपस में क्या सवाल जवाब करते हैं** (फिर तू यहां चले आना वो लोग जो कुछ कारवाई करेंगे उस से तेरा सच झूट पता चल जाएगा)(28)

नोटः- लिखा है कि एक बार सफ़र के दौरान हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने ऐसी जगह पड़ाव किया जहां पानी नहीं था और अल्लाह तआ़ला ने हुदहुद परिन्दे में यह ख़ास बात रक्खी है कि वो ज़मीन के अन्दर की चीज़ों को और ज़मीन के अन्दर बहने वाले पानी की धारों को देख लेता है तो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम हुदहुद से यह पता करना चाहते थे कि इस मैदान में पानी कितनी गहराई में है और किस जगह ज़मीन खोदने से पानी आसानी से मिल सकता है ताकि फिर वो जिन्नात को हुक्म दे देते कि उसकी बताई जगह ज़मीन को खोद कर पानी निकालो वो बड़ी जल्दी खोद कर पानी निकाल लेते थे इसलिए हुदहुद की पूछताछ की गई।

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّیْۤ اُلْقِیَ اِلَیَّ كِتٰبٌ كَرِیْمٌ ﴿۲۹﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَیْمٰنَ وَ اِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ﴿۳۰﴾ اَلَّا
تَعْلُوْا عَلَیَّ وَ اْتُوْنِیْ مُسْلِمِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالَتْ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِیْ فِیْۤ اَمْرِیْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى
تَشْهَدُوْنِ ﴿۳۲﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّ اُولُوْا بَاْسٍ شَدِیْدٍ ۙ۬ وَّ الْاَمْرُ اِلَیْكِ فَانْظُرِیْ مَا ذَا تَاْمُرِیْنَ ﴿۳۳﴾ قَالَتْ اِنَّ
الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْیَةً اَفْسَدُوْهَا وَ جَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَ كَذٰلِكَ یَفْعَلُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَ اِنِّیْ مُرْسِلَةٌ
اِلَیْهِمْ بِهَدِیَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ یَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَیْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَاۤ اٰتٰىنِ اللّٰهُ
خَیْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِیَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿۳۶﴾ اِرْجِعْ اِلَیْهِمْ فَلَنَاْتِیَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَ
لَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً وَّ هُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿۳۷﴾

आयत नं० 29 से 37

(सुलेमान अलैहिस्सलाम ने हुदहुद से यह बात करके मलिका बिलक़ीस के नाम एक ख़त लिखा जिसके बारे में आगे आता है और हुदहुद को दिया जिसने चोंच में ले जा कर बिलक़ीस के पास डाल दिया) **मलिका ने** (ख़त पढ़ कर अपने सरदारों को मशवरे के लिए बुलाया और) **कहा कि ऐ दरबार वालो मेरे पास एक ख़त डाला गया है** (जिस का बयान) **इज़्ज़तदार** (और हाकिमाना) **है(29) वो सुलेमान** (बादशाह) **की तरफ़ से है और उस में** (शुरू में) **यह** (लिखा) **है बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम(30)** (और उसके बाद यह कि) **तुम लोग मेरे मुक़ाबिले में घमन्ड मत करो और मेरे पास ताबेदार होकर चले आओ** (यानी सभी को इस्लाम की दावत दी)(31) **मलिका ने** (सुलेमान अलैहिस्सलाम के बारे में जान लेने के बाद) **कहा कि ऐ दरबार वालो तुम मुझ को मेरे इस मुआमले में राय दो**

(कि मुझ को सुलेमान के साथ में क्या बरताव करना चाहिए) **और मैं किसी बात का फ़ैसला नहीं करती जब कि तुम मेरे पास मौजूद न** (हों और राय में शरीक न) **हों**(32) **वो लोग कहने लगे कि हम** (तो हर तरह से हाज़िर हैं अगर मुक़ाबिला और लड़ना ठीक समझा जाए तो हम) **बड़े ताक़तवर और लड़ने वाले हैं** (और आगे) **तुम्हारी मर्ज़ी है सो तुम ही** (भलाई) **देख लो जो कुछ** (सोच कर) **हुक्म देना चाहो**(33) **मलिका कहने लगी कि** (मेरे नज़दीक तो लड़ने में तो भलाई नहीं क्योंकि सुलेमान बादशाह हैं और) **बादशाह जब किसी बस्ती में** (हमलावर होकर) **दाख़िल होते हैं तो उसको बर्बाद कर देते हैं और उसके रहने वालों में जो इज़्ज़तदार हैं उनको** (उनका ज़ोर घटाने के लिए) **ज़लील** (ब रूसवा) **किया करते हैं और** (उन से लड़ाई की जाए तो हो सकता है वो ही जीतें तो फिर) **ये लोग भी ऐसा ही करेंगे**(34) (इसलिए जंग को तो अभी छोड़ा जाए) **और** (अभी तो ऐसा करते हैं कि) **मैं उन लोगों के पास** (अपने लोगों के हाथ) **कुछ तोहफ़े भेजती हूं फिर देखूंगी कि वो भेजे हुए** (वहां से) **क्या** (जवाब) **लेकर आते हैं** (उस वक़्त दोबारा सोचा जाएगा बस तोहफ़ों का सामान लेकर आदमी रवाना हुए)(35) **जब वो लोग सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **के पास पहुंचे** (और तमाम तोहफ़े पेश किये) **तो सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि तुम लोग माल से मेरी मदद कर**(ना चाह)**ते हो** (इसलिए तोहफ़े लाए हो)**, सो** (समझ रक्खो कि) **अल्लाह ने जो कुछ मुझे दे रक्खा है वो उससे कहीं बेहतर है जो तुम को दे रक्खा है** (क्योंकि तुम्हारे पास सिर्फ़ दुनिया और मेरे पास दीन भी और दुनिया भी तुम से ज़्यादा इसलिए मैं तो इन चीज़ों का लालची नहीं हूं) **हां तुम ही अपने तोहफ़े पर ख़ुश होते होंगे** (बस ये तोहफ़े हम न लेंगे)(36) **तुम** (इन को लेकर) **उन लोगों के पास लौट जाओ** (अगर वो अब भी ईमान ले आएं तो ठीक है वर्ना) **हम उन पर ऐसी फ़ौजें भेजते हैं कि उन लोगों से उन का ज़रा भी मुक़ाबिला न हो सकेगा और हम उन को वहां से ज़लील करके निकाल देंगे और वो** (सदा के लिए हमारे) **मातहत** (और रिआया) **हो जाएंगे** (ये नहीं कि आज़ादी से छोड़ दिये जाएंगे बल्कि सदा के लिए रूसवाई व ताबेदारी उनके लिए ज़रूरी हो जाएगी)(37)

नोटः- ख़त के शुरू में बिस्मिल्लाह लिखना पैग़म्बरों की सुन्नत है मगर आज कल ख़तों को बेअदबी से एक तरफ़ डाल दिया जाता है बल्कि कूड़े दान में डाल दिया जाता है ऐसी सूरत में ख़त लिखते हुए सुन्नत अदा करने के लिए ज़बान से बिस्मिल्लाह कहले ख़त में न लिखें।

قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿۳۸﴾ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ
قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿۳۹﴾ قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ
قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْۤ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ
وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ﴿۴۰﴾ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْۤ
اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۴۱﴾

आयत नं० 38 से 41

(बस जब वो लोग अपने तोहफ़े लेकर वापस गये तो सुलेमान अलैहिस्सलाम के इल्म और पैग़म्बरी के हालात जान कर मलिका बिलक़ीस हाज़िर होने के इरादे से अपने मुल्क से चली तो) **सुलेमान** (अलैहिस्सलाम को उसके आने का पता चल गया और उन्हों) **ने** (अपने दरबार वालों से) **कहा कि ऐ दरबार वालो तुम में कोई ऐसा है जो उस** (बिलक़ीस) **का तख़्त मेरे पास ले आए उनके ताबेदार होकर आने से पहले** (ताकि वो लोग मेरा मोजिज़ा भी देख कर पैग़म्बरी का यक़ीन करलें कि ऐसी हिफ़ाज़त से रक्खा हुआ और इतना बड़ा तख़्त अचानक कैसे आगया)(38) **एक ज़बरदस्त जिन्न ने जवाब में कहा कि मैं उस को आप के पास ले आऊंगा इससे पहले कि आप अपने दरबार से उठें और** (माना वो बहुत भारी है मगर) **मैं उस** (के लाने) **पर ताक़त रखता हूं** (और माना वो बड़ा क़ीमती और मोतियों से सजा हुआ है मगर मैं) **अमानतदार** (भी) **हूं** (उसमें कोई हेराफेरी न करूंगा)(39) **जिस के पास** (अल्लाह की) **किताब का इल्म था** (मुराद सुलेमान अलैहिस्सलाम हैं बस) **उस** (इल्म वाले) **ने** (उस जिन्न से) **कहा कि** (बस तुझ में तो इतनी ही ताक़त है और) **मैं उस को तेरे सामने तेरी आंख झपकने से पहले ला सकता हूं** (क्योंकि मोजिज़े की ताक़त से लाऊंगा बस आपने अल्लाह तआ़ला से दुआ की तो वो तख़्त फ़ौरन सामने आ मौजूद हुआ), **जब सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने उसको अपने सामने रक्खा देखा तो** (ख़ुश होकर शुक्र के तौर पर) **कहने लगे कि यह भी मेरे रब की महरबानी है** (कि मेरे हाथ से यह मोजिज़ा दिखा दिया) **ताकि वो मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या** (ख़ुदा न करे) **नाशुक्री करता हूं, और जो कोई शुक्र करता है वो अपने ही नफ़े के लिए शुक्र करता है** (अल्लाह तआ़ला का कोई नफ़ा नहीं) **और** (इसी तरह) **जो नाशुक्री करता है** (वो भी अपना ही नुक़सान करता है अल्लाह तआ़ला का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **मेरा रब बेपरवा है** (यानी किसी का मुहताज नहीं और) **करम**

करने वाला है(40) (उसके बाद) **सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने** (बिलक़ीस की अक़्ल आज़माने के लिए) **हुक्म दिया कि उसके तख़्त की सूरत बदल दो हम देखें उस को पता लगता है या उस की गिनती उन्हीं में है जिन को** (ऐसी बातों का) **पता नहीं लगता** (अगर समझदार है तो हक़ बात समझने की ज़्यादा उम्मीद है और उसके हक़ को पहचानने का असर दूर तक भी पहुंचेगा)(41)

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَ كُنَّا مُسْلِمِيْنَ ۝٤٢ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ۝٤٣ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِى الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّ كَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۬ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ وَ اَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٤

आयत नं० 42 से 44

(सुलेमान अलैहिस्सलाम ने यह सब सामान कर रक्खा था फिर मलिका बिलक़ीस पहुंची) **सो जब मलिका आई तो** (तख़्त दिखा कर) **उससे कहा गया कि क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है? वो कहने लगी कि हां है तो वैसा ही** (बिलक़ीस उस को पहचान गई और उसके बदल देने को भी समझ गई) **और** (यह भी कहा कि) **हम लोगों को तो इस क़िस्से से पहले ही** (आप की पैग़म्बरी की) **तस्दीक़ हो चुकी है और हम** (उसी वक़्त से दिल से) **ताबेदार हो चुके हैं** (जब हमारे भेजे हुए लोगों से आप के कमालों का पता चला था इस मोजिज़े की कोई ज़रूरत न थी)(42) **और** (असल में वो समझदार थी मगर कुछ दिनों तक जो ईमान न लाई थी तो उसकी वजह यह है कि) **उस को** (ईमान लाने से) **अल्लाह के सिवा दूसरों की इबादत ने रोक रक्खा था** (जिस की उस को आदत थी, और आदत इसलिए पड़ गई थी कि) **वो काफ़िर क़ौम में की थी** (बस जो सब को देखा वो ही आप करने लगी)(43) **मलिका से कहा गया कि इस महल में दाख़िल हो जाओ** (जिसके सहन में ऐसा हौज़ बनवाया था जिसमें पानी में मच्छलियां तैर रही थीं और ऊपर साफ़ शीशा था) **तो जब उस का सहन देखा तो उस को पानी** (से भरा हुआ) **समझा और** (इसलिए उसके अन्दर घुसने के लिए अपने कपड़े उठाए और) **अपनी दोनो पिन्डलियां खोल दीं,** (उस वक़्त) **सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि यह तो महल है जो शीशों से बनाया गया है** (और यह हौज़ भी शीशे से ढका है कपड़े उठाने की ज़रूरत नहीं उस वक़्त) **मलिका बोल उठी कि या रब मेरे मैंने** (अब तक) **अपनी जान**

पर ज़ुल्म किया था (कि शिर्क में गरिफ़्तार थी) **और मैं** (अब) **सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **के साथ** (यानी उनके दीन पर) **होकर सारे जहानों के रब अल्लाह पर ईमान लाई**(44)

नोटः- क़ुरआन में तो ज़िक्र नहीं मगर हज़रत अकरमा से रिवायत है कि उसके बाद बिलक़ीस का हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम से निकाह हुआ। और हर महीने हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम यमन तशरीफ़ ले जाते और बिलक़ीस के पास तीन दिन ठहरते थे।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۴۵﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ
تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْ لَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۴۶﴾ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَ بِمَنْ
مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ كَانَ فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِى
الْاَرْضِ وَ لَا يُصْلِحُوْنَ ﴿۴۸﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَ اَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ
اَهْلِهٖ وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَ مَكَرُوْا مَكْرًا وَّ مَكَرْنَا مَكْرًا وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۵۰﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَ قَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۵۱﴾ فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّعْلَمُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۳﴾

आयत नं० 45 से 53

और हमने समूद (की क़ौम) **के पास उनके** (बिरादरी के) **भाई सालिह** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर यह पैग़ाम देकर) **भेजा कि तुम** (शिर्क को छोड़ कर) **अल्लाह की इबादत करो** (चाहिए तो यह था कि सब ईमान ले आते मगर) **उन में दो गिरोह हो गये** (यानी एक गिरोह तो ईमान लाया और एक न लाया) **जो दीन के बारे में आपस में झगड़ने लगे**(45) (और जब सालिह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के अज़ाब से डराया तो उन्होंने कहा लाओ वो अज़ाब कहां है इस पर) **सालिह** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि ऐ भाइयों तुम नेक काम** (यानी तौबा व ईमान) **से पहले अज़ाब क्यों जल्दी मांगते हो तुम लोग अल्लाह के सामने** (कुफ़्र से) **मुआफ़ी क्यों नहीं चाहते जिस से उम्मीद हो कि तुम पर रहम किया जाए** (यानी अज़ाब से बचे रहो)(46) **वो लोग कहने लगे कि हम तो तुम को और तुम्हारे साथ वालों को मनहूस समझते हैं** (कि जब से तुम ने यह

मज़हब निकाला है क़ौम में फूट पड़ गई है जिसकी वजह तुम लोग हो), **सालिह** (अलैहिस्सलाम) **ने** (जवाब में) **कहा कि तुम्हारी** (इस) **नुहूसत** (की वजह) **अल्लाह को पता है** (यानी तुम्हारे कुफ़्र के काम अल्लाह को पता हैं यह नुहूसत उन्हीं कामों की वजह से है उसकी वजह यह दीन नहीं) **बल्कि तुम वो लोग हो कि** (इस कुफ़्र की वजह से) **अज़ाब में पकड़े जाओगे(47) और** (यूं तो काफ़िर उस क़ौम में बहुत थे लेकिन सरदार) **उस बस्ती में नौ आदमी थे जो ज़मीन में** (यानी बस्ती से बाहर तक भी) **फ़साद किया करते थे और** (ज़रा भी) **सुधार** (की बात) **न करते थे(48) उन्होंने** (एक बार यह फ़साद किया कि) **आपस में** (एक दूसरे से) **कहा सब** (इस पर) **अल्लाह की क़सम खाओ कि हम रात के वक़्त सालिह और उनके ताल्लुक़ वालों** (यानी ईमान वालों) **को जाकर मार देंगे फिर** (अगर पूछताछ की नौबत आई तो) **हम उनके वारिस से** (जो ख़ून का दावा करेगा) **कह देंगे कि उन के घर वालों के** (और ख़ुद उन के) **मारे जाने में मौजूद** (भी) **न थे** (मारना तो दूर रहा) **और** (यह भी कह देंगे कि) **हम बिल्कुल सच्चे हैं** (और गवाह कोई देखने वाला होगा नहीं बस बात दबदबा जाएगी)**(49) और** (यह मशवरा करके) **उन्होंने एक चाल चली** (कि रात के वक़्त इस कार्रवाई के लिए चले) **और एक चाल हम ने चली और उनको पता भी न चल सका** (वो यह कि एक पहाड़ से एक पत्थर उन पर लुढक आया और वो सब वहां ही हलाक हो गये)**(50) तो देखिए उन की शरारतों का क्या अन्जाम हुआ कि हमने उन को** (इस तरह) **और** (फिर) **उनकी** (बाक़ी) **क़ौम को** (आसमानी अज़ाब से) **सब को हलाक कर दिया(51) सो ये उन के घर हैं जो उन के कुफ़्र की वजह से वीरान पड़े** (हैं जो मक्के वालों को मुल्क शाम के सफ़र में मिलते) **हैं, बेशक इस** (क़िस्से) **में बड़ा सबक़ है समझदारों के लिए(52) और हम ने ईमान वालों और परहेज़गारों को** (उस क़त्ल से जिस का मशवरा हुआ था और अज़ाब से भी) **बचा लिया(53)**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि काफ़िर भी झूट को बुरा समझते थे।

وَ لُوۡطًا اِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهٖۤ اَتَاۡتُوۡنَ الۡفَاحِشَةَ وَ اَنۡتُمۡ تُبۡصِرُوۡنَ ﴿۵۴﴾ اَئِنَّكُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ الرِّجَالَ شَهۡوَةً مِّنۡ دُوۡنِ
النِّسَآءِ ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ قَوۡمٌ تَجۡهَلُوۡنَ ﴿۵۵﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوۡمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوۡۤا اَخۡرِجُوۡۤا اٰلَ لُوۡطٍ مِّنۡ قَرۡيَتِكُمۡ ۚ
اِنَّهُمۡ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوۡنَ ﴿۵۶﴾ فَاَنۡجَيۡنٰهُ وَ اَهۡلَهٗۤ اِلَّا امۡرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرۡنٰهَا مِنَ الۡغٰبِرِيۡنَ ﴿۵۷﴾ وَ اَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ
مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الۡمُنۡذَرِيۡنَ ﴿۵۸﴾ قُلِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيۡنَ اصۡطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيۡرٌ اَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۵۹﴾

आयत नं० 54 से 59

और हमने लूत (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बना कर उन की क़ौम के पास) **भेजा था जब कि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम यह बेशर्मी का काम करते हो हालांकि समझदार हो** (क्या इसकी बुराई नहीं समझते)(54) **क्या** (यह कोई यक़ीन करने की बात है कि) **तुम मर्दों के साथ बुरा काम करते हो औरतों को छोड़ कर, बल्कि** (असल बात यह है कि तुम बड़ी) **जहालत** (का काम) **कर रहे हो**(55) (इस नसीहत का) **उन की क़ौम से कोई** (सही) **जवाब न बन पड़ा सिवाए इस के कि आपस में कहने लगे कि लूत** (अलैहिस्सलाम) **के लोगों को** (यानी उन पर ईमान लाने वालों को उन के साथ) **तुम अपनी बस्ती से निकाल दो** (क्योंकि) **ये लोग बड़े पाक साफ़ बनते हैं**(56) **सो** (जब यहां तक नौबत पहुंच गई तो) **हम ने** (उस क़ौम पर अज़ाब भेजा और) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **को और उनके लोगों को** (उस अज़ाब से) **बचा लिया सिवाए उनकी बीवी के कि उसको** (ईमान न लाने की वजह से) **हम ने उन्हीं लोगों में तय कर रक्खा था जो अज़ाब में रह गये थे**(57) **और** (वो अज़ाब जो उन पर आया यह था कि) **हम ने उन पर एक नई तरह की बारिश बरसाई** (कि वो पत्थरों की बारिश थी) **सो उन लोगों पर कैसी बुरी बारिश बरसाई गई जो** (पहले अल्लाह के अज़ाब से) **डराए गये थे** (जिस पर उन्होंने, ध्यान न दिया)(58) **कहिए सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और सलाम हो उसके उन बन्दों पर जिन को उसने चुन लिया है** (यानी पैग़म्बर)**, क्या अल्लाह बेहतर है या वो जिन को उन लोगों ने अल्लाह की ख़ुदाई में शरीक बना रक्खा है**(59)

मसअलाः- इस आयत से साबित हुआ कि ख़ुतबा अल्लाह तआ़ला की हम्द और पैग़म्बरों पर दरूद व सलाम से शुरू होना चाहिए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम के तमाम ख़ुतबों में ये ही तरीक़ा रहा है बल्कि हर अहम काम के शुरू में अल्लाह की हम्द और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम सुन्नत व मुस्तहब है।